भारतीय वैश्विक परिषद्

सप्रू हाउस शोधपत्र

2009 के पश्चात
भारत-श्रीलंका
संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

डॉ. समथा मल्लेमपाटी

2009 के पश्चात

भारत-श्रीलंका

संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

डॉ. समथा मल्लेमपाटी

2009 के पश्चात
भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ. एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में भारतीय बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में भारतीय परिप्रेक्ष्य का सृजन करना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान व चिंतन के संग्रहकर्ता के रूप में कार्य करना था। परिषद आज आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान आयोजित करती है। संस्था नियमित रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानों सहित कई बौद्धिक गतिविधियां आयोजित करती है और कई प्रकार के प्रकाशन भी प्रकाशित करती है। संस्था के पास अच्छे संग्रह वाला एक पुस्तकालय है, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह त्रैमासिक इंडिया पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर ज्ञान को बढ़ावा देने तथा आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने हेतु आईसीडब्ल्यूए ने अंतर्राष्ट्रीय थिंक टैंक और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं। परिषद की भारत में प्रमुख अनुसंधान संस्थानों, थिंक टैंकों तथा विश्वविद्यालयों के साथ भी भागीदारी है।

2009 के पश्चात

भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

सर्वप्रथम विश्व मामलों की भारतीय परिषद में फरवरी 2022 में प्रकाशित

आईएसबीएन: 978-93-83445-73-8

सभी अधिकार आरक्षित हैं। कॉपीराइट धारक की लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा किसी भी प्रारूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी रिकॉर्डिंग, या अन्यथा, पुन: प्रस्तुत या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रेषित नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकाशन में उद्धृत तथ्यों और विचारों की जिम्मेदारी विशेषतः लेखकों की है और उनकी व्याख्या विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली के विचारों या नीति को व्यक्त नहीं करती है।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

सप्रू हाउस, बाराखंबा रोड

नई दिल्ली 110001, भारत

टेलीफोन: +91-11-2331 7246-49 | फैक्स: +91-11-2331 1208

www.icwa.in

2009 के पश्चात

भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

अंतर्वस्तु

सार-संक्षेप . . . .

प्रस्तावना. . . . .

चिंतन –2009 से पूर्व के घटनाक्रम. . . . .

घरेलू कारक. . . . .

2009 के पश्चात. . . . .

आकलन. . . . .

मछुआरों का मुद्दा. . . . .

बहुसंख्यक धारणा. . . . .

बाह्य कारक. . . . .

हिंद महासागर की भू-राजनीति: नई वास्तविकताओं के साथ तालमेल. . . . .

प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण: विचलन एवं अभिसरण. . . . .

समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग में वृद्धि. . . . .

क्षेत्रीय देशों के साथ श्रीलंका का जुड़ाव. . . . .

अमेरिका. . . . .

चीन. . . . .

2022 घटनाक्रम: नई चुनौतियां. . . . .

2009 के पश्चात सुरक्षा गतिशीलता: अवलोकन. . . . .

एंडनोट्स

सार-संक्षेप

2009 से, भारत-श्रीलंका संबंधों में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। भू-राजनीतिक हित, सुरक्षा आवश्यकताएं, आर्थिक कूटनीति, विकास सहायता एवं सशस्त्र संघर्ष के पश्चात पुनः मेल-जोल, भारत-श्रीलंका संबंधों को निर्धारित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं। इस संदर्भ में, "भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी" और "श्रीलंका का भारत प्रथम" दृष्टिकोण से पूर्व दोनों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिसने अंततः वर्तमान संबंधों को आकार मिला। श्रीलंका में लगभग तीन दशकों के आंतरिक सशस्त्र संघर्ष का अंत, आर्थिक सुधार पर ध्यान देना, तथा एशिया-केंद्रित विदेश नीति पर बल की वजह से भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंध फिर से शुरु हुए। क्षेत्रीय स्तर पर, हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) क्षेत्रीय एवं अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियों के शामिल होने से सत्ता के खेल और प्रभाव का रंगमंच बन गया है। इसकी वजह से आईओआर के प्रति संबंधित दृष्टिकोण के आधार पर संबंधों को फिर से आकार देने का मार्ग प्रशस्त हुआ है, और इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, शांति व स्थिरता से संबंधित मुद्दों पर विचार किया गया है। इसलिए, इस शोधपत्र में जातीय मुद्दा, पुनः मेल-जोल, मछुआरों का मुद्दा, संवेदन की भूमिका, हिंद महासागर में शांति एवं सुरक्षा के प्रति दृष्टिकोण, भारत-श्रीलंका संबंधों को आकार देने में बाहरी कारकों की भूमिका जैसे उन घरेलू एवं बाहरी कारकों पर चर्चा की गई है और अंत में 2009 के पश्चात की सुरक्षा गतिशीलता पर टिप्पणियां की गईं हैं, जो युद्ध के पश्चात सुरक्षा गतिशीलता को प्रभावित कर रहे हैं।

मुख्य शब्द

हिंद महासागर, सुरक्षा, पुनः मेल-जोल

प्रस्तावना

इस क्षेत्र की प्रमुख शक्ति होते हुए भी भारत को 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात से पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बनाए रखने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने पड़ोसी देशों के साथ भारत की नीति संधि-आधारित सुरक्षा व्यवस्था (इंदिरा सिद्धांत) से लेकर संबंधों में पारस्परिकता (गुजराल सिद्धांत) तक विकसित हो चुकी है।[1] अपने सुरक्षा हितों के लिए इस क्षेत्र की बाहरी शक्तियों को खाड़ी तक रखने की भारत की इच्छा के परिणामस्वरूप विभिन्न सुरक्षा व्यवस्था[2] जैसे 1962 में भारत-चीन युद्ध, भारत-पाकिस्तान युद्ध (1965, 1971, 1999), मालदीव में ऑपरेशन कैक्टस (1988) और श्रीलंका में इंडियन पीस कीपिंग फोर्स (आईपीकेएफ) के अनुभव के बावजूद नेपाल के साथ 1950 की शांति एवं मित्रता संधि, 1949 में भूटान के साथ संधि, 1972 में बांग्लादेश के साथ शांति, मित्रता एवं सहयोग संधि हस्ताक्षर किए गए, और 1987 में श्रीलंका के साथ समझौता किया गया। इन सभी समझौतों की वजह से क्षेत्र में भारत के हितों को संतुलित करने हेतु क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता में अन्य-क्षेत्रीय शक्तियाँ आ गईं। संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) तथा चीन के साथ पाकिस्तान का जुड़ाव, ब्रिटेन और चीन के साथ श्रीलंका के संबंध, अमेरिका हेतु एक नौसैनिक अड्डे के रूप में डिएगो गार्सिया का विकास इस संबंध में कुछ उदाहरण है। 1990 के दशक से, हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में भारत की भू-रणनीतिक स्थिति ने भारत को दक्षिण एशिया से बाहर के देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने हेतु प्रेरित किया है। इसलिए, दक्षिण-पूर्व एशिया भारत का विस्तारित सामरिक पड़ोस बन गया।[3] दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) की अनुपस्थिति में, बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के देशों को एक मंच पर साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

स्वतंत्रता के पश्चात के वर्षों में भारत के साथ श्रीलंका के संबंधों को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। श्रीलंका इस क्षेत्र में भारत का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है। अच्छी भौगोलिक स्थिति की वजह से श्रीलंका हिंद महासागर के लिए रणनीतिक प्रवेश द्वार माना जाता है।[4] सिर्फ रणनीतिक दृष्टि से ही नहीं, श्रीलंका सांस्कृतिक, धार्मिक एवं लोगों-से-लोगों के जुड़ाव के मामले में भी भारत का एक भागीदार है। हालाँकि, भारत-श्रीलंका संबंधों को लघु एवं मध्यम शक्तियों के बीच का संबंध कहा जाता है जिसकी वजह भय व संदेह है।[5] दक्षिण एशिया के अन्य राष्ट्रों के उलट, ग्रेट ब्रिटेन से श्रीलंका (तब सीलोन कहा जाता है) की स्वतंत्रता शांतिपूर्ण से हुई थी। ली कुआन यू ने अपने संस्मरण - फ्रॉम थर्ड वर्ल्ड टू फर्स्ट में लिखा है, "सीलोन ब्रिटेन का आदर्श राष्ट्रमंडल देश था।"[6] हालांकि, श्रीलंका के नीति निर्माताओं ने आकार, अर्थव्यवस्था एवं भौगोलिक विषमता की वजह से भारत के प्रति उभयभावी रवैया दिखाया।[7] उदाहरण के लिए, दक्षिण एशिया में भारत के प्रभुत्व को संतुलित करने हेतु स्वतंत्रता के पश्चात ब्रिटेन के साथ रक्षा समझौते और राष्ट्रमंडल के साथ संबंधों को श्रीलंका की सुरक्षा का स्तंभ माना गया था।[8] हालांकि, श्रीलंका के स्वतंत्र इतिहास के अधिकांश हिस्से में, अंतः जातीय मुद्दों की वजह से इसकी रणनीतिक और आर्थिक क्षमता का कम उपयोग हुआ। भारत ने जातीय मुद्दे को हल करने में हस्तक्षेप से लेकर तीसरे पक्ष के ज़रिए मध्यस्थता और सुविधा का समर्थन करने तक विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए, लेकिन श्रीलंका की घरेलू राजनीति के सबसे अधिक दबाव वाले इस मुद्दे का राजनीतिक समाधान तलाशने में कोई भी दृष्टिकोण सफल नहीं रहा।

श्रीलंका के स्वतंत्र इतिहास के अधिकांश हिस्से में, अंतः जातीय मुद्दों की वजह से इसकी रणनीतिक और आर्थिक क्षमता का कम उपयोग हुआ। भारत ने जातीय मुद्दे को हल करने में हस्तक्षेप से लेकर तीसरे पक्ष के ज़रिए मध्यस्थता और सुविधा का समर्थन करने तक विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए

साल 2009 श्रीलंका के लिए काफी अहम रहा। श्रीलंका सरकार और लिबरेशन टाइगर्स ऑफ़ तमिल ईलम (लिट्टे) के बीच तीस वर्ष पुराना जातीय सशस्त्र संघर्ष समाप्त हो गया। इस वजह से श्रीलंका ने नए संबंधों, एशिया केंद्रित विदेश नीति, हिंद महासागर में शांति व सुरक्षा पर बल की दिशा में एक नई यात्रा शुरू की। इस संदर्भ में, भू-राजनीतिक

साल 2009 श्रीलंका के लिए काफी अहम रहा। श्रीलंका सरकार और लिबरेशन टाइगर्स ऑफ़ तमिल ईलम (लिट्टे) के बीच तीस वर्ष पुराना जातीय सशस्त्र संघर्ष समाप्त हो गया।

हित, सुरक्षा व आर्थिक ज़रूरतें, विकास में सहायता की तलाश और सशस्त्र संघर्ष के बाद सुलह कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जिनका पिछले दशक में श्रीलंका और भारत-श्रीलंका संबंधों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। भारत ने आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिरता हासिल करने में श्रीलंका की मदद की और भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करने हेतु आर्थिक व सुरक्षा सहयोग बढ़ाने की मांग की। साथ ही, भारत की "नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी" और "श्रीलंका की भारत प्रथम" दृष्टिकोण को विभिन्न घरेलू तथा बाहरी कारकों की वजह से कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसलिए, इस शोधपत्र में इस बात पर गौर किया जाएगा कि कैसे इन दोनों कारकों ने 2009 से दोनों देशों के बीच सुरक्षा गतिशीलता को आकार दिया है और भविष्य हेतु इसके क्या निहितार्थ हैं। शुरुआत में शोधपत्र में 2009 के पूर्व के घटनाक्रमों पर चर्चा की गई है। घरेलू कारकों में, शोधपत्र में सुलह की दिशा में प्रगति, मछुआरों के मुद्दे तथा बहुसंख्यक धारणा की भूमिका पर चर्चा की गई है। बाहरी कारकों पर आधारित दूसरे खंड में, शोधपत्र में आईओआर में विकास, आईओआर में शांति व सुरक्षा के प्रति भारत और श्रीलंका के दृष्टिकोण, अभिसरण व विचलन, और अमेरिका और चीन के साथ श्रीलंका के जुड़ाव और निहितार्थ पर चर्चा की गई है। इसके अलावा, शोधपत्र में श्रीलंका में 2022 के विकास और प्रभावों पर भी चर्चा की गई है। अंत में शोधपत्र में भारत और श्रीलंका के बीच 2009 के पश्चात की सुरक्षा गतिशीलता पर कुछ टिप्पणियां की गईं हैं।

चिंतन – 2009 से पूर्व के घटनाक्रम

स्वतंत्रता के पश्चात अपनी सुरक्षा एवं विदेश नीति को आकार देने के बीच, कभी -कभी औपनिवेशिक शासन के दौरान अन्य समुदायों को स्पष्ट लाभ प्रदान करके श्रीलंका के अभिजात वर्ग ने काफी सावधानी से सिंहल समरूपता के समेकन की दिशा में काम किया है। 1931 में भारतीय मूल के देश तमिलों को दिए गए मतदान अधिकार,

अर्थव्यवस्था, सिविल सेवा पर श्रीलंकाई तमिल प्रभुत्व, और उत्तर एवं उत्तर-पूर्व तथा देश के मध्य भागों में तमिल समुदाय के जनसांख्यिकीय समेकन से स्वतंत्रता के बाद देश की संरचनाओं में सिंहल प्रभुत्व खोने का डर पैदा हुआ।[9] 4 फरवरी, 1948 को स्वतंत्रता के समय, 'श्रीलंकाई तमिल एवं अभिजात्य तमिलों की जनसंख्या कुल मिलाकर सीलोन की जनसंख्या का तीस-तीन प्रतिशत थी।'[10]

1948 के सीलोन नागरिकता अधिनियम, 1956 का केवल सिंहल अधिनियम की वजह से अभिजात्य तमिलों का विघटन, 1972 की शिक्षा नीति का मानकीकरण और 1974 में पेश किए गए जिला कोटा ने संवैधानिक एवं विधायी साधनों के माध्यम से तमिल समुदाय को अपने अधिकारों से वंचित किया। इन घटनाक्रमों से जातीय भेदभाव और तमिल उग्रवाद भी बढ़ा, जिसने श्रीलंका के स्वतंत्रता के बाद के इतिहास के अधिकांश हिस्से में लड़ने से इनकार कर

> द्वीप राष्ट्र के भीतर जातीय पहचान की राजनीति के समेकन के बीच, भारत और श्रीलंका ने द्विपक्षीय मुद्दों को सौहार्दपूर्ण तरीके से हल करने का प्रयास किया। इस संबंध में एक उदाहरण देश के तमिलों का प्रत्यावर्तन और पुनर्वास था।

दिया। 1956, 1958 और 1974 में श्रीलंकाई तमिल समुदाय के खिलाफ हिंसा, उग्रवाद की वकालत करने वाले आतंकवादी तमिल समूहों के केवल समर्थन आधार को समेकित किया। ततमिल उग्रवाद के साथ, श्रीलंका में राज्य को भी 1971-83 और 1987-89 में देश के दक्षिण में सरकार की आर्थिक और विदेशी नीतियों के खिलाफ, जनता विकमुथी पेरामुना (जेवीपी) के नेतृत्व में सिंहल युवाओं द्वारा सशस्त्र विद्रोह का सामना करना पड़ा।[11] श्रीलंकाई सरकार ने पुलिस बल का उपयोग करके जेवीपी विद्रोह को दबा दिया और यह माना जाता है कि विरोध प्रदर्शन के दौरान हजारों युवा मारे गए थे। आंतरिक राजनीतिक विकास 1972 में संवैधानिक परिवर्तनों के साथ आए, और 1978 तक इसमें बौद्ध धर्म, और सिंहल भाषा को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया था, और श्रीलंका को एकात्मक राज्य के रूप में परिभाषित किया था। विद्वानों के अनुसार स्वतंत्रता के बाद के इन राजनीतिक घटनाक्रम ने तेजी से 'श्रीलंका को लोकतंत्र से नृजातीय' में बदल दिया।[12]

इस द्वीप राष्ट्र के भीतर जातीय पहचान की राजनीति के समेकन के बीच, भारत और श्रीलंका ने द्विपक्षीय मुद्दों को सौहार्दपूर्ण तरीके से हल करने की कोशिश की। इस संबंध में एक उदाहरण अभिजात्य तमिलों का प्रत्यावर्तन और पुनर्वास था। 1964 के बाद से, छह लाख से अधिक देश के तमिलों को भारतीय नागरिकता दी गई है। श्रीलंका ने 7,40,985 अभिजात्य देश तमिलों को नागरिकता प्रदान की और विभिन्न अधिनियमों के माध्यम से उनकी प्राकृतिक विकास की भी अनुमति दी।[13] हालांकि, जुलाई 1983 के बाद तमिल-विरोधी दंगों (जिसे ब्लैक जुलाई भी कहा जाता है) के संदर्भ में श्रीलंका में होने वाली इस घटना को भारत ने भी गंभीरता से लिया क्योंकि इसके प्लवन प्रभाव और तमिलनाडु की चिंता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। इसने भारत को तमिल आतंकवादी संगठनों को गुप्त राजनीतिक-सैन्य सहायता प्रदान करने के लिए प्रेरित किया।[14] 1984 में, अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने तमिल सशस्त्र संघर्ष को 'आतंकवाद' और बर्बरता का 'कायरतापूर्ण रूप' बताते हुए निंदा की।'[15] यूनाइटेड किंगडम (यूके) के प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर ने भी 1985 में लिट्टे की गतिविधियों की निंदा की। जयवर्धने की अगुवाई वाली सरकार ने अमेरिका को श्रीलंका के पश्चिम मध्य तट में वॉयस ऑफ अमेरिका सुविधा स्थापित करने की अनुमति दी और एक अमेरिकी कंपनी को ट्रिनकोमली तेल टैंक को बहाल करने हेतु एक अनुबंध भी किया।[16] इसी दौरान अमेरिकी

महासागर में चागोस द्वीपसमूह में डिएगो गार्सिया में एक सैन्य और खुफिया आधार स्थापित करने का निर्णय भारत और श्रीलंका के द्विपक्षीय संबंधों में एक चिंता का विषय बन गया।

श्रीलंका में इन घटनाक्रमों के बीच, भारत ने जून 1987 में प्रत्यक्ष सैन्य कार्रवाई का विकल्प चुना और जाफना प्रायद्वीप पर भोजन व दवाएं गिराई। 1987 के इंडो-श्रीलंका समझौते और इंडियन पीस कीपिंग फोर्स (आईपीकेएफ) की उपस्थिति श्रीलंका में भारत द्वारा अपेक्षित जातीय मुद्दे का स्थायी समाधान नहीं हो सकती थी, लेकिन समझौते से कुछ हद तक भारत की सुरक्षा चिंताओं का ध्यान रखा गया। समझौते के अनुलग्नक III में एक-दूसरे की एकता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा हेतु पूर्वाग्रहपूर्ण गतिविधियों के लिए संबंधित क्षेत्रों का उपयोग न करने की बात की गई है। श्रीलंका ने उन मामलों के बारे में भारत की चिंताओं पर सहमति व्यक्त की जैसे कि ट्रिंकोमाली में किसी भी देश

> वार्ता के माध्यम से राजनीतिक समाधान तलाशने हेतु नॉर्वे को 1997 से 2009 तक श्रीलंका की शांति प्रक्रिया में मदद करने और बाद में शामिल होने हेतु आमंत्रित किया गया था।

को सैन्य अड्डा होने की अनुमति देना, और विदेशी प्रसारण संगठनों के साथ हस्ताक्षरित समझौतों की समीक्षा करना यह सुनिश्चित करने हेतु कि इन सुविधाओं का उपयोग सैन्य एवं खुफिया उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा रहा है। भारत भी श्रीलंकाई सुरक्षा बलों के लिए प्रशिक्षण सुविधाएं और सैन्य आपूर्ति प्रदान करने पर सहमत हुआ[17]

1991 में भारतीय प्रधानमंत्री (पीएम) राजीव गांधी की हत्या के बाद, भारत श्रीलंकाई संघर्ष में हस्तक्षेप करने से बचने लगा, लेकिन श्रीलंका को तीसरे पक्ष की सुविधा एवं मध्यस्थता के ज़रिए राजनीतिक समाधान खोजने हेतु प्रोत्साहित किया। भारत 1992 में लिट्टे पर प्रतिबंध लगाने वाला पहला देश बन गया और इसे आतंकवादी संगठन नामित किया गया। नॉर्वे को 1997 से 2009 तक श्रीलंकाई शांति प्रक्रिया में शामिल होने और बाद में बातचीत के ज़रिए राजनीतिक समाधान खोजने हेतु आमंत्रित किया गया था। फरवरी 2002 में प्रधानमंत्री रानिल विक्रामसिंघे और लिट्टे सुप्रीमो प्रभाकरन द्वारा एक संघर्ष विराम समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।[18] यू.एस., यूरोपीय संघ, जापान और नॉर्वे इस शांति प्रक्रिया के सह-अध्यक्ष थे। भारत को भी नॉर्वे द्वारा शांति प्रक्रिया में घटनाक्रम की पूरी जानकारी दी गई थी।

लगभग इसी दौरान हुए अमेरिका में 9/11 के हमलों से श्रीलंकाई सरकार को लिट्टे की युद्ध की रणनीति के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय मदद जुटाने का मौका मिल गया। लिट्टे द्वारा 2003 में शांति प्रक्रिया के एकतरफा निलंबन से भी संगठन को एक अलग ईलम हेतु आवश्यक अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने में मदद नहीं मिली। इन घटनाक्रमों ने महिंदा राजपक्षे की श्रीलंकाई सरकार के पक्ष में काम किया। श्रीलंका ने श्रीलंकाई तमिल प्रवासी के अभियान का मुकाबला करने की कोशिश की, जो संगठन पर प्रतिबंध लगाने को लेकर मेजबान सरकारों को आश्वस्त करके पश्चिम में लिट्टे की मदद कर रहे थे। 1997 में अमेरिका और 2001 में यूके द्वारा लिट्टे का अभियोग, लिट्टे की हथियारों की आपूर्ति में गंभीर रूप से विवश था। लेकिन इससे श्रीलंका के मानवाधिकार रिकॉर्ड पर सवाल उठाने से पश्चिम नहीं रुका। इस तरह का कदम इसके बाद कई अन्य देशों ने उठाया और वर्तमान में यह लगभग 33 देशों में प्रतिबंधित है जिसमें पूरे यूरोप, दक्षिण पूर्व एशिया, अमेरिका और कनाडा शामिल हैं।

2009 के पश्चात
भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

कुल मिलाकर, नॉर्वे द्वारा ब्रोसी की गई शांति प्रक्रिया शुरू से ही नाज़ुक थी क्योंकि इसमें जल्दबाजी में एक लंबा 'नो-वॉर, नो-पीस' वक्तव्य दिया गया था।[19] श्रीलंका सरकार और लिट्टे सरकार के बीच छह दौर की बातचीत में भी कोई समझौता नहीं हो सका। दिसंबर 2004 में सुनामी के बाद राष्ट्र का पुनर्निर्माण करने हेतु सभी हितधारकों को एक साथ काम करने का अवसर मिला, लेकिन सहायता वितरण प्रावधानों पर विवाद के कारण यह अवसर भी चला गया।[20] सिंहल और श्रीलंका तमिल समुदाय दोनों को सुनामी लहरों का सामना करना पड़ा था। 2004 में लिट्टे में विभाजन ने भी श्रीलंकाई सरकार के पक्ष में काम किया।

2009 तक, लिट्टे को श्रीलंकाई सशस्त्र बलों की वजह से अपनी जमीन का अधिकांश हिस्सा खोना पड़ा था, और श्रीलंका सरकार ने कूटनीतिक पहुँच के ज़रिए मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए उत्तरदायित्व पर पश्चिम के दबाव का मुकाबला करने का प्रयास किया।[21] उदाहरण के लिए, श्रीलंका ने 2009 में लिट्टे के साथ अंतिम युद्ध के दौरान संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) में अपना पक्ष रखा और मानवाधिकार पर अपना बचाव किया। अमेरिका के अनुसार, 'यूएनएचआरसी में श्रीलंका की मुखर कार्रवाइयों ने गुट निरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) देशों को अपील की और यह संकेत दिया कि श्रीलंका पश्चिम के खिलाफ खड़े होने को तैयार है, जो गलत तरीके से उसे उठा रहा था।'[22] श्रीलंका पर 2007 और 2009 के बीच विकिलीक्स केबल्स यह भी बताते हैं कि परिषद में खुद को बचाने में श्रीलंका द्वारा दिखाए गए मुखरता से पश्चिम अचंभित था और इसने अल्प विकसित देशों के खिलाफ पश्चिम का इस्तेमाल करने की कोशिश की।[23] पर विशेष सत्र में 2009 में श्रीलंका, यह भारत, चीन और रूस से समर्थन प्राप्त करने में कामयाब रहा और सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव से बचा। 2009 में श्रीलंका पर विशेष सत्र में, यह भारत, चीन और रूस से समर्थन प्राप्त करने में सफल रहा तथा सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव को टाल गया।

श्रीलंका के लंबे समय से सहयोगी रहे चीन, पाकिस्तान, रूस और अन्य देशों ने 2009 में लिट्टे के साथ श्रीलंकाई सशस्त्र बलों की अंतिम चरण के युद्ध में मदद की। भारत ने इसमें सक्रिय भूमिका निभाई और " ट्रोइका" तंत्र (2008-2009) के ज़रिए श्रीलंका में आंतरिक युद्ध की स्थिति से निपटा, जो युद्ध के बीच भारत-श्रीलंका संबंधों से निपटने में अपनी-अपनी सरकारों की ओर से निर्णय ले सकता था। इस तंत्र के माध्यम से मानवीय और साथ ही सुरक्षा चिंताओं दोनों को एक साथ संबोधित किया गया।[24] भारत ने भी पूरी तरह से श्रीलंकाई सरकार के कार्यों का विरोध नहीं किया, लेकिन युद्ध क्षेत्र में फंसे अनुमानित 70,000 नागरिकों को सुरक्षित निकालने हेतु बीच का रास्ता निकालने की कोशिश की। इसने लिट्टे द्वारा नागरिकों के मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल करने की बात को भी स्वीकार किया।[25] श्रीलंकाई नौसेना को भारत द्वारा प्रदान किए गए अपतटीय गश्ती पोत (ओपीवी), गैर-घातक उपकरण आपूर्ति और वायु रक्षा सहायता प्रणाली ने समुद्री निगरानी बढ़ाकर लिट्टे की आपूर्ति श्रृंखला को प्रतिबंधित करने में मदद की।फिर भी युद्ध क्षेत्र में फंसे नागरिक भारत के लिए मुख्य चिंता बने रहे।[26] मई 2009 में लिट्टे की

> 2009 से पहले, श्रीलंका को जिस मुख्य सुरक्षा चुनौती का सामना करना पड़ा, वह बाहर के बजाय भीतर से थी। श्रीलंका के भीतर आंतरिक राजनीतिक गतिशीलता शक्तिशाली बाहरी कारकों के लिए भी समझने के लिए बहुत जटिल थी, जो विभिन्न हितधारकों के साथ शांति वार्ता करने में शामिल थे।

हार हुई। 19 मई, 2009 को राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे ने "आतंकवाद" की हार का जश्न मनाया तथा वादा किया कि तमिल नागरिकों की शिकायतों को दूर करने हेतु एक समझौता किया जाएगा।[27]

2009 के पश्चात

भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

लेकिन 2009 में श्रीलंकाई सेना और लिट्टे के बीच अंतिम संघर्ष के कारण लगभग 40,000 नागरिक हताहत हुए और कई लापता हो गए।[28]

आंतरिक संघर्ष के कारण रक्षा बजट बढ़ाया गया और श्रीलंका के भीतर सशस्त्र बलों पर ध्यान केंद्रित किया गया। उदाहरण के लिए, सैन्य बजट 1978 में $35 मिलियन (जीडीपी का 1.3%) से बढ़कर 2008 में $1,600 मिलियन (3.9%) हो गया।[29] 1985 में सेना में लगभग 22,000 कर्मचारी थे और 2009 में युद्ध के अंत तक, सेना ने 223,000 कर्मियों की भर्ती की थी। 2009 में, देश में प्रत्येक 100,000 लोगों पर 1,099 सक्रिय-ड्यूटी वाले सैन्यकर्मी थे; भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल में तुलनीय अनुपात क्रमशः 227, 543, 136 और 293 थे, जिससे श्रीलंका दक्षिण एशिया में सबसे अधिक सैन्यीकृत देश बन गया।[30]

2009 से पहले, श्रीलंका को जिस मुख्य सुरक्षा चुनौती का सामना करना पड़ा वह बाहर के बजाय भीतर से थी। श्रीलंका की आंतरिक राजनीतिक गतिशीलता शक्तिशाली बाहरी देशों की समझने के लिए बहुत जटिल थी, जो विभिन्न हितधारकों के साथ शांति स्थापित करने में शामिल थे। आंतरिक जातीय गतिशीलता ने श्रीलंका की राजनीति और अर्थव्यवस्था को काफी हद तक बदल दिया। राजनीति अधिक विखर गई और समाज बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक में विभाजित हो गया। यह अंततः एक दीर्घकालिक जातीय-राजनीतिक संघर्ष का कारण बना, जिसे भारतीय हस्तक्षेप और नॉर्वे की सुविधा तथा मध्यस्थता के माध्यम से हल नहीं किया जा सका। वार्ता के दौरान श्रीलंकाई तमिलों को दी गई कोई भी रियायत, जैसे कि संघीय समाधान पर विचार करने का प्रस्ताव और अंतर्राष्ट्रीय दाता समर्थन का सिंहली आबादी द्वारा जोरदार विरोध किया गया, जिन्होंने इसे अपनी पहचान के लिए खतरा माना। किसी भी प्रक्रिया के माध्यम से लिट्टे को सही ठहराना सिंहली बहुसंख्यकों की सामूहिक चेतना को स्वीकार्य नहीं था।

घरेलू कारक

इस खंड में घरेलू कारकों जैसे सुलह की दिशा में प्रगति, मछुआरों के मुद्दे तथा संबंधों में बहुमत की धारणा की भूमिका पर चर्चा की गई है।

<u>2009 के पश्चात्</u>

2009 में युद्ध समाप्त होने के बाद भी, 'जातीय राष्ट्रवाद सिंहल समाज में एक मजबूत सन्निहित प्रेरक शक्ति बना रहा जिसने श्रीलंका की राजनीति और अंततः सुलह की प्रगति को निर्धारित किया।'[31] इस परिदृश्य में, 2009 के बाद भारत की कई चिंताएँ थीं। उनमें से कुछ थे - प्लवन के प्रभावों से युक्त श्रीलंका के युद्ध-ग्रस्त उत्तरी और पूर्वी प्रांतों का पुनर्निर्माण, एक सौहार्दपूर्ण राजनीतिक हल तलाशने के लिए तमिलनाडु में प्रतिक्रियाओं से निपटना एवं युद्ध के बाद की सुलह प्रक्रिया में अंतर्राष्ट्रीय प्रत्यक्ष भागीदारी से बचने के लिए श्रीलंका सरकार और अन्य हितधारकों, जैसे कि श्रीलंकाई तमिल पार्टियों को राजी करना।

भारत ने युद्ध के बाद श्रीलंका के उत्तर और पूर्व के पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। युद्ध के ठीक बाद, इसने रुपये प्रदान किए। युद्ध के तुरंत बाद, इसने श्रीलंका के भीतर 300,000 आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों (आईडीपी) की तत्काल राहत हेतु राहत, पुनर्वास और पुनर्वास कार्य के लिए 500 करोड़ रुपये प्रदान किए।[32] भारत के मानवीय प्रयासों को बाद के वर्षों में श्रीलंका के उत्तर, पूर्व और मध्य प्रांतों[33] में लगभग 65,000 घरों के

निर्माण, उत्तरी श्रीलंका में 800 मिलियन डॉलर की क्रेडिट लाइन के साथ रेलवे लाइनों के निर्माण एवं जाफना में सांस्कृतिक केंद्र की बहाली हेतु विस्तारित किया गया था।

श्रीलंका में जातीय मुद्दे पर भारत की स्थिति पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है और 1987 के समझौते की अपेक्षाओं से परे पहुंच गई है। युद्ध के बाद के शुरुआती वर्षों में, भारत का मानना था कि "श्रीलंका में सशस्त्र संघर्ष की समाप्ति ने अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधित सभी बाकी मुद्दों को संबोधित करने का एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान किया।"[34] भारत का यह भी मानना था कि 'श्रीलंका की सरकार और तमिल पक्षों के बीच संवाद, और संविधान के 13वें संशोधन पर निर्माण, सुलह हेतु आवश्यक शर्तें और संयुक्त श्रीलंका के ढांचे के भीतर एक राजनीतिक समाधान तैयार की जा सकती है, जो सभी समुदायों के लिए स्वीकार्य हो सकता है।'[35] साथ ही, पश्चिम द्वारा प्रायोजित किसी भी संभावित अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई से बचने के लिए श्रीलंका में मानवाधिकारों की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट का जवाब देने में सावधानी बरती गई। उदाहरण के लिए, भारत 2011 में श्रीलंका में जवाबदेही के मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों के पैनल की रिपोर्ट का जवाब देने में सावधान था, और चैनल 4 के वृत्तचित्र में दिखाए गए मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोपों पर चिंता जताई। भारत ने कहा कि 'एक पारदर्शी प्रक्रिया के ज़रिए मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच और पूछताछ करना श्रीलंका सरकार की जिम्मेदारी है।'[36] एक अंतर्निहित चिंता यह थी कि भारत द्वारा किसी भी दावे का द्विपक्षीय संबंधों पर प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए, इसने यह पता लगाने की कोशिश की कि सुलह की प्रक्रिया में श्रीलंका की सहायता कैसे की जाए और शांति के हितधारकों के बीच संवाद को बढ़ाया जाए।[37] फिर भी, भारत तमिलनाडु के भारतीय राज्य से निकलने वाले श्रीलंकाई तमिलों की दुर्दशा से संबंधित घरेलू भावनाओं और मांगों को पूरी तरह से अनदेखा नहीं कर सका। तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके), भारत में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार के एक गठबंधन सहयोगी ने केंद्र सरकार को 2011 और 2013 में संयुक्त राष्ट्र में श्रीलंका के खिलाफ मतदान करने के लिए राजी किया। उसी वर्ष, तमिलनाडु विधानसभा ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें भारत से ईलम के निर्माण पर जनमत संग्रह के लिए जोर देने को कहा गया।[38] 2009 के बाद से, डीएमके और अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (एआईडीएमके) दोनों से संबंधित तमिलनाडु के क्रमिक मुख्यमंत्रियों ने जातीय और मछुआरों के मुद्दे पर प्रकाश डालते हुए भारत में केंद्र सरकारों को कई पत्र लिखे हैं। युद्ध के बाद के वर्षों में भारत के भीतर इन विकासों ने श्रीलंकाई तमिल मुद्दे को जीवित रखा और यूएनएचआरसी में भारत के वोट को प्रभावित किया।

श्रीलंका सरकार ने महिंदा राजपक्षे सरकार (2010-2014) के कार्यकाल के दौरान सुलह पर प्रगति दर्शाने के दबाव का दो तरह से जवाब दिया। एक रणनीतिक साझेदारी के तहत चीन के साथ संलग्नता में स्पष्ट वरीयता के माध्यम से

श्रीलंका में जातीय मुद्दे पर भारत की स्थिति पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है और 1987 के समझौते की अपेक्षाओं से परे पहुंच गई है। युद्ध के बाद के शुरुआती वर्षों में, भारत का मानना था कि "श्रीलंका में सशस्त्र संघर्ष की समाप्ति ने अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधित सभी बाकी मुद्दों को संबोधित करने का एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान किया।"

विदेश नीति के मोर्चे पर था।

दूसरा, "लेसन लर्नड एंड रिकॉन्सिलिएशन कमीशन" (एलएलआरसी) की स्थापना करके घरेलू मोर्चे पर था, जिसने कथित मानवाधिकारों के उल्लंघन में सुलह एवं जांच की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने की सिफारिश की थी। चीन

ने जातीय मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में श्रीलंका का समर्थन किया। दिलचस्प बात यह है कि इससे पहले कोलंबो ने 2014 में चीन के राष्ट्रपति शी जिंगिंग की श्रीलंका यात्रा के दौरान चीन के बीआरआई का समर्थन किया था, जिसे

श्रीलंका सरकार ने महिंदा राजपक्षे सरकार (2010-2014) के कार्यकाल के दौरान सुलह पर प्रगति प्रदर्शित करने के दबाव का दो तरह से जवाब दिया।

सुलह पर पश्चिम और भारत के दबाव से निपटने हेतु श्रीलंका का एक संतुलनकारी कार्य माना गया था। भारत ने आयोग की रिपोर्ट का स्वागत किया क्योंकि रिपोर्ट में स्वीकार किया गया था कि "संघर्ष के मूल कारण को दूर करने हेतु एक राजनीतिक समाधान अनिवार्य है।"[39] इस संदर्भ में, भारत ने श्रीलंका सरकार से मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोपों की जांच हेतु स्वतंत्र और विश्वसनीय तंत्र स्थापित करने के लिए कहा।[40] हालांकि, एलएलआरसी की सिफारिशों को पूरी तरह से लागू करने की श्रीलंका सरकार की अनिच्छा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिंताएं बढ़ा दी। पश्चिम द्वारा जीएसटी+ रियायत सुलह में प्रगति पर निर्भर थी।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा व्यक्त की गई तमाम चिंताओं के बावजूद श्रीलंका की जमीनी स्थिति में ज्यादा बदलाव नहीं आया। श्रीलंका के संविधान में 18वें संशोधन के ज़रिए राष्ट्रपति के हाथों में सत्ता का केंद्रीकरण, आतंकवाद निरोधक अधिनियम (पीटीए) का गैरकानूनी उपयोग, पत्रकारों और नागरिक समाज के कार्यकर्ताओं पर हमले, और उत्तर व पूर्व में नागरिक क्षेत्रों का सैन्यीकरण श्रीलंका ने 2014 में मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघन की संयुक्त राष्ट्र द्वारा जांच का आह्वान किया।[41] आंतरिक रूप से, श्रीलंका में भी देश के दक्षिण में अतिराष्ट्रवादी बौद्ध संगठनों द्वारा मुस्लिम समुदाय पर हमले बढ़े, जो लंबे समय तक केंद्र में सिंहली राजनीतिक दलों का समर्थन करते थे। इसके परिणामस्वरूप सिंहली, तमिल और मुस्लिम पक्षों से संबंधित राजनीतिक ताकतों को संरेखित किया गया है। 2015 के चुनावों में राजपक्षे के नेतृत्व वाले गठबंधन, यूनाइटेड पीपुल्स फ्रीडम एलायंस (यूपीएफए) को हराने के लिए सिंहली राजनीतिक दलों, यूनाइटेड नेशनल पार्टी (यूएनपी), श्रीलंका फ्रीडम पार्टी (एसएलएफपी), तमिल नेशनल अलायंस (टीएनए) और श्रीलंका मुस्लिम कांग्रेस (एसएलएमसी) से मिलकर एक "रेनवो गठबंधन" किया गया। भारत को श्रीलंका की आंतरिक चुनावी राजनीति में घसीटा गया। महिंदा राजपक्षे ने 2015 के चुनावों में अपनी हार के लिए भारत और अमेरिका को जिम्मेदार ठहराया।[42]

8 जनवरी, 2015 के राष्ट्रपति चुनाव के परिणाम श्रीलंका की पिछली बहुसंख्यक चुनावी राजनीति से महत्वपूर्ण थे। आम सहमति के उम्मीदवार मैत्रीपाला सिरिसेना ने चुनाव जीत लिया। इस परिवर्तन को "न्यू श्रीलंका" कहा गया था जहां नेताओं ने सुशासन, जातीय सद्भाव, लोकतंत्र, आर्थिक विकास, जवाबदेही और सुलह को सुदृढ़ करने का वादा किया था।"[43] राष्ट्रीय एकता सरकार (एनयूजी) के गठन के बाद, जॉन एफ. केरी ने मई 2015 में श्रीलंका का दौरा किया। यह 43 वर्षों में किसी अमेरिकी विदेश मंत्री द्वारा इस द्वीप राष्ट्र की पहली आधिकारिक यात्रा थी। भारतीय प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी ने भी मार्च 2015 में श्रीलंका का दौरा किया, जो 28 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा

एनयूजी ने सुलह और विकास को दोहरा उद्देश्य बताया और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को यह दिखाने का प्रयास किया कि वह अपने दावों के अनुरूप कार्य करेगा।

पहली आधिकारिक यात्रा थी और वो भारत के पहले प्रधानमंत्री थे जिसने जाफना के युद्ध-ग्रस्त उत्तरी श्रीलंकाई शहर का दौरा किया। तब से भारत और श्रीलंका के बीच विभिन्न आर्थिक और निवेश सहयोग समझौतों पर सहमति बनी।

एनयूजी ने सुलह और विकास को दोहरा उद्देश्य बताया और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को यह दिखाने का प्रयास किया कि वह अपने दावों के अनुरूप कार्य करेगा। लोगों को उच्च सुरक्षा क्षेत्रों में ज़मीन वापस देना, विदेशी मीडिया को पूर्व युद्ध क्षेत्रों में प्रवेश करने की अनुमति देना, श्रीलंका के संविधान का 19वां संशोधन जिसने संवैधानिक परिषद और न्यायिक सेवा, राष्ट्रीय पुलिस, लोक सेवा, चुनाव, रिश्वत और भ्रष्टाचार और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग जैसे स्वतंत्र आयोगों की स्थापना सकारात्मक विकास थे। एनयूजी ने अमेरिका के नेतृत्व वाले यूएनएचआरसी 30/1 प्रस्ताव को "श्रीलंका में सुलह, जवाबदेही और मानवाधिकारों का संवर्धन" शीर्षक से सह-प्रायोजित करके जातीय मुद्दे को संबोधित करने की मांग की।[44] यूके, मैसेडोनिया और मोंटेनेग्रो अन्य देश थे जिन्होंने संकल्प को सह-प्रायोजित किया था। संकल्प में दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार, श्रीलंका ने 2018 तक मिशन व्यक्तियों के कार्यालय (ओएमपी) और मरम्मत कार्यालय की स्थापना की। जन परामर्श, इस तरह का पहला, सुलह तंत्र पर परामर्श कार्य बल द्वारा किया गया था। टीएनए नेता आर. संपंतन को संसद में विपक्ष का नेता नियुक्त किया गया था। भारत ने एनयूजी के दौरान श्रीलंका पर यूएनएटआरसी के प्रस्तावों का समर्थन किया।

हालाँकि, श्रीलंका सरकार द्वारा श्रीलंका पर संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के समर्थन से श्रीलंका सरकार और श्रीलंकाई तमिल राजनीतिक दलों के बीच सुलह के बारे में विरोधाभासी धारणा नहीं बदली। संयुक्त राष्ट्र में एनयूजी ने राष्ट्रीय स्वतंत्र न्यायिक तंत्र के पक्ष में तर्क दिया।[45] इसने "2015 में श्रीलंका (ओआईएसएल) पर ओएचसीएचआर जांच रिपोर्ट या बाद के किसी भी आधिकारिक दस्तावेज में युद्ध अपराधों या मानवता के खिलाफ अपराधों पर व्यक्तियों के खिलाफ कोई सिद्ध आरोप नहीं हैं," यह कहते हुए यूएन में वार हीरोज बताते हुए श्रीलंकाई सेना का बचाव किया,[46] श्रीलंका ने यह भी कहा कि युद्ध अपराधों की जांच में किसी विदेशी को न्यायाधीश की किसी भी अंतरराष्ट्रीय भागीदारी और नियुक्ति "संसद के 2/3 सदस्यों द्वारा पक्ष में मतदान करने और जनमत संग्रह में लोगों की स्वीकृति" द्वारा संविधान में संशोधन की आवश्यकता है।”[47]

हालाँकि, ओआईएसएल ने अपने निष्कर्षों में कहा कि अर्धसैनिक समूहों की भूमिका, करुणा समूह (लिट्टे से अलग हुआ हिस्सा), सेना की विशेष संचालन इकाइयों, सेना की खुफिया शाखाओं सहित सुरक्षा बलों की विभिन्न शाखाएँ, और पुलिस की एसटीएफ की जांच की जानी चाहिए।[48] ओआईएसएल रिपोर्ट का टीएनए द्वारा स्वागत किया गया क्योंकि रिपोर्ट में मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच हेतु श्रीलंका को एक विशेष हाईब्रिड कोर्ट स्थापित करने के लिए कहा गया था। टीएनए ने तमिल समुदाय से भी आत्मनिरीक्षण करने का आह्वान किया।[49] एनयूजी के गठन के पश्चात श्रीलंका की राजनीति में सकारात्मक गति लंबे समय तक नहीं रही। 2018 में पीएम रानिल विक्रमसिंघे और राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना के बीच मतभेदों के कारण सरकार गिर गई। भारत को एक बार फिर श्रीलंका की घरेलू राजनीति में खींच लिया गया। राष्ट्रपति सिरिसेना ने 16 अक्टूबर 2018 को एक कैबिनेट बैठक में भारत की खुफिया एजेंसी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) पर उनकी हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया।[50] लेकिन 17 अक्टूबर 2018 को श्रीलंका के राष्ट्रपति ने भारतीय प्रधानमंत्री से मुलाकात की और "श्रीलंका के राष्ट्रपति और पूर्व रक्षा सचिव की हत्या की कथित साजिश में किसी भी तरह से भारत की संलिप्तता की ओर इशारा करने वाली मीडिया में आई खबरों को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया।”[51]

आंतरिक राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, अप्रैल 2019 में श्रीलंका के आईएसआईएस से प्रेरित युवाओं द्वारा कोलंबो में ईस्टर संडे बम विस्फोटों ने देश में राजनीतिक और सुरक्षा परिदृश्य को बदल दिया। श्रीलंका के भीतर नए गैर-

पारंपरिक सुरक्षा खतरे सामने आए। 2019 में गोटबाया राजपक्षे के नेतृत्व वाली एसएलपीपी सरकार के गठन के बाद नैतिक मुद्दे का राजनीतिक हल तलाशने के अवसर बंद हो गए थे। सरकार कार्यकारी राष्ट्रपति पद के आसपास सत्ता के समेकन की ओर झुक गई थी। सेना कमांडर के रूप में लेफ्टिनेंट जनरल शैवेंद्र सिल्वा की नियुक्ति जैसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर नागरिक स्थानों के सैन्यीकरण और युद्ध अपराधों के आरोपी सैन्य कर्मियों की नियुक्ति की दिशा में एक स्पष्ट कदम था। इससे एक बार फिर ध्यान मानवाधिकार के मुद्दों पर चला गया है। युद्ध के अंतिम चरण के दौरान किए गए युद्ध अपराधों में उनकी कथित भूमिका के कारण अमेरिका ने 2020 में श्रीलंकाई सेना के कमांडर और रक्षा कर्मचारियों के प्रमुख शैवेंद्र सिल्वा और उनके तत्काल परिवार पर यात्रा प्रतिबंध लगा दिया। 2021 में श्रीलंकाई सेना के दो और जवानों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। श्रीलंका सरकार ने इस कदम पर कड़ी आपत्ति जताई।

2020 में, श्रीलंका पूरी तरह से यूएनएचआरसी के प्रस्ताव से हट गया। यह कदम उस सुलह तंत्र के लिए एक झटका था जो संयुक्त राष्ट्र की निगरानी में आकार ले रहा था। श्रीलंका के मौजूदा संविधान में 13वें संशोधन को लागू करने, या इसे नए संविधान में शामिल करने, जिसे सरकार संसद के माध्यम से लाने की योजना बना रही है, में एसएलपीपी सरकार के आश्वासन की कमी चिंता का विषय बनी रही। श्रीलंका में आंतरिक विकास और सुलह से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने में श्रीलंका सरकार द्वारा दिखाई गई रुचि की कमी को देखते हुए भारत ने 2021 में यूएनएचआरसी में मतदान से भाग नहीं लिया। श्रीलंका पर 2021 का संकल्प देश के मानवाधिकार इतिहास के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण था और जवाबदेही एवं सुलह की प्रगति सहित मानवाधिकार की स्थिति पर निगरानी और रिपोर्टिंग की बात की गई थी।[52]

<u>आकलन</u>

2009 के पश्चात श्रीलंका पर संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थिति मुख्यतः दो विचारों से प्रेरित थी, "पहला समानता, न्याय, गरिमा और शांति एवं श्रीलंका के तमिलों का समर्थन। दूसरा श्रीलंका की एकता, स्थिरता एवं क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करना।"[53] श्रीलंका में आंतरिक घटनाक्रम और उस पर भारत की प्रतिक्रिया से भी ज्ञात होता है कि अविभाजित श्रीलंका में बातचीत के जरिए राजनीतिक समाधान में भारत का समर्थन श्रीलंका के साथ निरंतर जुड़ाव में महत्वपूर्ण था। युद्ध के दौरान और बाद में भारत की सूक्ष्म भूमिका को श्रीलंका भी अच्छी तरह समझ गया है। उदाहरण के लिए, पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे ने कहा, "युद्ध के दौरान भारत-श्रीलंका संबंधों को बनाए रखने में मदद करने वाली ट्रॉइक तंत्र को जारी रखा जाना चाहिए था।"[54] श्रीलंका के संविधान में 13वें संशोधन के कार्यान्वयन पर भारत की स्थिति श्रीलंका की विभिन्न हाई-प्रोफाइल यात्राओं के साथ-साथ यूएनएचआरसी जैसे संयुक्त राष्ट्र मंचों पर प्रतिध्वनित हुई है। लिट्टे पर अभियोग लगाते हुए, भारत ने श्रीलंका की जातीय राजनीति में खुद को ऐसे देश के रूप में स्थापित करने की कोशिश की, जो श्रीलंका की एकता का पक्षधर होगा। हालाँकि, श्रीलंका की अस्थिर जातीय राजनीति भारत के लिए सुरक्षा चिंता

2009 के बाद श्रीलंका पर संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थिति मुख्यतः दो विचारों से निर्देशित थी, "पहली समानता, न्याय, गरिमा और शांति के लिए श्रीलंका के तमिलों का समर्थन। दूसरा श्रीलंका की एकता, स्थिरता और क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करना।

बनी हुई है। श्रीलंका के भीतर जातीय मुद्दे के दीर्घकालिक राजनीतिक समाधान के किसी भी वास्तविक प्रयास के अभाव में, श्रीलंका सरकार द्वारा आतंकवाद विरोधी प्रयास लिट्टे के विदेशी नेटवर्क को पूरी तरह से खत्म करने हेतु पर्याप्त नहीं हैं। मई 2009 में संगठन के नेता वेलुपिल्लई प्रभाकरन सहित लिट्टे नेतृत्व के अधिकांश प्रमुख नेताओं के पतन के बाद भी, लिट्टे का संगठनात्मक नेटवर्क विभिन्न माध्यमों से बने रहने की कोशिश कर रहा है। उदाहरण के लिए, कथित तौर पर लिट्टे को फिर से शुरु करने हेतु धन जुटाया जा रहा है, हालांकि हमलों एवं अन्य हिंसक गतिविधियों के संदर्भ में प्रत्यक्ष सक्रियता की कोई जानकारी नहीं मिली है।[55] 2017 की अमेरिकी विदेश विभाग की रिपोर्ट ने श्रीलंका और भारत दोनों को लिट्टे के कार्यकर्ताओं द्वारा संचालन का क्षेत्र माना। 2014 के बाद से, मलेशिया ने लिट्टे समर्थकों और नेटवर्कों पर नकेल कस दी है और 13 लिट्टे समर्थकों को कथित रूप से भारत में अमेरिका और इज़राइली राजनयिक सुविधाओं के खिलाफ हमलों की योजना बनाने के मामले में गिरफ्तार किया गया था।[56] 2019 में, लगभग 12 लोगों को संगठन से कथित संबंधों के कारण मलेशिया में हिरासत में लिया गया था।[57] जनवरी 2022 में, तमिलनाडु पुलिस ने एक श्रीलंकाई नागरिक को गिरफ्तार किया जो कथित रूप से संगठन को फिर से शुरु करने हेतु धन जुटा रहा था।

> आने वाले वर्षों में अनसुलझे जातीय मुद्दे शायद द्विपक्षीय संबंधों में एक चुनौती बने रहेंगे। भारत के लिए सुरक्षा चुनौती विगत में भी थी और संभवतः भविष्य में होगी, अगर इसका कोई राजनीतिक समाधान नहीं खोजा जाता है।

पाक जलडमरूमध्य में तथा वैश्विक नेटवर्क के ज़रिए इस संगठन ने कैसे काम किया और संचालन किया, इसके इतिहास को देखते हुए, इसके फिर से शुरु होने के संकेत भारतीय और श्रीलंकाई दोनों सरकारों के लिए चिंता का विषय हैं। भारत सरकार ने 2019 में 'भारत की अखंडता और संप्रभुता हेतु हिंसक एवं विघटनकारी गतिविधियों को जारी रखने और मजबूत भारत-विरोधी स्थिति अपनाने जो भारतीय नागरिकों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती है।' के आधार पर लिट्टे पर प्रतिबंध को और पांच साल के लिए बढ़ा दिया था।[58] इस क्षेत्र में बढ़ते समुद्री सहयोग और निगरानी और भारत व श्रीलंका के बीच खुफिया सूचनाओं के आदान-प्रदान को देखते हुए लिट्टे के लिए जल्द फिर से पनप पाना मुश्किल हो सकता है। लेकिन इस मुद्दे का राजनीतिक समाधान खोजने तथा सत्ता हस्तांतरण, जवाबदेही और मानवाधिकारों के संबंध में श्रीलंकाई तमिल समुदाय की वास्तविक चिंताओं को दूर करने के साथ इन प्रयासों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। अन्यथा, क्योंकि तमिल अल्पसंख्यक समुदाय के हितों को समायोजित करने में सरकार की अक्षमता संभवतः 2009 से प्राप्त सापेक्ष शांति को भंग कर सकती है।

आने वाले वर्षों में अनसुलझे जातीय मुद्दे शायद द्विपक्षीय संबंधों में एक चुनौती बने रहेंगे। भारत के लिए सुरक्षा चुनौती विगत में भी थी और संभवतः भविष्य में होगी, अगर इसका कोई राजनीतिक समाधान नहीं खोजा जाता है। तमिलनाडु में लगभग 58,543 श्रीलंकाई तमिल शरणार्थी 108 शिविरों में और 54 ओडिशा में रह रहे हैं। अन्य 34,135 शरणार्थी शिविरों के बाहर रह रहे हैं।[59] श्रीलंका में जातीय संघर्ष के दौरान, 1983 से 2012 तक, लगभग 3,04,269 श्रीलंकाई शरणार्थी भारत आए थे।[60] संकट के समय में श्रीलंकाई तमिल शरणार्थियों के लिए भारत पहली

तथा स्वाभाविक देश है, इसलिए श्रीलंका में आंतरिक स्थिरता हमेशा भारत की अपनी सुरक्षा के लिए अपरिहार्य रही है।

<u>मछुआरों का मुद्दा</u>

मछुआरों का मुद्दा एक अन्य मुद्दा है, जो द्विपक्षीय संबंधों में चिंता का विषय बना हुआ है। श्रीलंका की भारतीय प्रादेशिक जल सीमा से निकटता की वजह से अक्सर मछली पकड़ने वाले दोनों पक्षों के मछुआरे सीमा को पार कर जाते हैं। बहुत पहले 1921 में, भारत तथा श्रीलंका के ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने समुद्री संसाधनों के अत्यधिक दोहन से उत्पन्न होने वाले जोखिमों का आकलन किया तथा जल को 'मछली पकड़ने की रेखा' के रूप में सीमांकित किया।[61] अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (आईएमबीएल) समझौतों के माध्यम से जल का सीमांकन 1974 और 1976 में, और समुद्री समझौते के तहत 1974 में कच्चातिवु द्वीप को श्रीलंका को सौंपने का भारत का निर्णय, तमिलनाडु सरकार की निराशा के बावजूद, मछुआरों, विशेष रूप से भारतीय मछुआरों को सीमा रेखा पार करने से नहीं रोका जा सका, क्योंकि, सदियों से भारत तथा श्रीलंका के बीच के पानी को दोनों समुदाय हेतु पारंपरिक जल माना जाता था।

आईएमबीएल की अवैध क्रॉसिंग और अवैध, गैर-रिपोर्टेड तथा अनियमित (आईयूयू) मछली पकड़ना आजादी के बाद के अधिकांश वर्षों तक जारी रहा। लिट्टे द्वारा आवश्यक वस्तुओं एवं हथियारों की आपूर्ति हेतु समुद्री मार्गों का इस्तेमाल एक जटिल द्विपक्षीय मुद्दा बन गया। श्रीलंकाई राज्य के खिलाफ लिट्टे युद्ध के चरम के दौरान इसके नौसैनिक संगठन को दुनिया में सबसे दुर्जेय गैर-राज्य नौसेना के रूप में माना जाता था।[62] लिट्टे के 'समुद्री टाइगर्स' ने कई वर्षों तक उत्तरी जल में समुद्री मार्गों पर मजबूत पकड़ के साथ संचालित तथा नियंत्रित किया, जिससे श्रीलंकाई नौसेना के लिए सीमांत युद्धाभ्यास की जगह बची। लिट्टे की हार के बाद, दोनों देशों ने एक सौहार्दपूर्ण समावेशी समाधान खोजने की कोशिश की है जो सभी हितधारकों की चिंताओं को दूर कर सके।

लेकिन श्रीलंकाई नौसेना द्वारा आईएमबीएल को पार करके भारतीय मछुआरों की गिरफ्तारी और गोली चलाने का

आईएमबीएल की अवैध क्रॉसिंग और अवैध, गैर-रिपोर्टेड तथा अनियमित (आईयूयू) मछली पकड़ना आजादी के बाद के अधिकांश वर्षों तक जारी रहा। लिट्टे द्वारा आवश्यक वस्तुओं एवं हथियारों की आपूर्ति हेतु समुद्री मार्गों का इस्तेमाल एक जटिल द्विपक्षीय मुद्दा बन गया।

भारत में विरोध जारी है। यह 2009 के बाद के वर्षों में संबंधों में यह एक फ्लैश प्वाइंट बन गया है।

भारत सरकार द्वारा प्रदान की गई जानकारी के अनुसार '2019-2021 के बीच श्रीलंकाई नौसेना द्वारा लगभग 500 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया गया था और कुल 73 भारतीय नौकाओं (2019 में 42, 2020 में 11 और 2021 में 20) को श्रीलंकाई अधिकारियों द्वारा जब्त किया गया था।[63] श्रीलंकाई नौसेना के अनुसार, सितंबर 2022 तक, उसने 25 ट्रॉलरों को जब्त कर लिया है और श्रीलंका के जलक्षेत्र में 189 भारतीय मछुआरों को पकड़ लिया है।[64] 2019 के बाद से, उनके जहाजों और श्रीलंकाई नौसैनिक जहाजों के बीच कथित टक्कर के बाद अलग-अलग घटनाओं

में छह मछुआरों की जान चली गई है।'[65] ये आंकड़े समुद्री सीमा को लेकर समस्या को प्रकट करते हैं। जुलाई 2022 में, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने श्रीलंकाई नौसेना द्वारा भारतीय मछुआरों की गिरफ्तारी से निपटने हेतु भारत के विदेश मंत्री (ईएएम) से अनुरोध किया, क्योंकि 'गिरफ्तारी से तमिलनाडु के मछुआरे डर रहे हैं और इससे राज्य के तटीय क्षेत्रों में असुरक्षा तथा भय की भावना पैदा होने की संभावना है।।'[66]

2016 से, दोनों पक्षों के मछुआरों की तत्काल चिंताओं को दूर करने तथा इस मुद्दे का स्थायी समाधान तलाशने हेतु मत्स्य पालन पर एक संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी), तंत्र मौजूद है।[67] संबंधित मंत्रालयों को शामिल करते हुए, संयुक्त कार्य समूह की स्थापना, अक्टूबर 2008 में दोनों सरकारों के बीच मानवीय आधार पर मामले से निपटने और सुरक्षित व टिकाऊ तरीके से मछली पकड़ने के तरीकों को प्रोत्साहित करने हेतु एक समझ का परिणाम था।[68] मार्च 2022 में मत्स्य पालन पर पांचवें संयुक्त कार्य समूह की बैठक हुई। यह तंत्र दोनों पक्षों में हिरासत में लिए गए मछुआरों की रिहाई को संबोधित करने में सहायक था, लेकिन श्रीलंकाई नौसेना द्वारा जब्त की गई नावों को छुड़ाने का काम धीमा रहा है क्योंकि नावों को छोड़ने में विभिन्न प्रक्रियाएं शामिल हैं। जुलाई 2022 तक, तमिलनाडु राज्य की लगभग 92 नावें श्रीलंकाई नौसेना की हिरासत में हैं। नाव को छुड़ाने के लिए, उसके मालिक को स्वामित्व का दावा करने हेतु व्यक्तिगत रूप से श्रीलंका की अदालत में पेश होना पड़ता है। श्रीलंका की इस शर्त का तमिलनाडु में काफी विरोध हुआ है, जिसने केंद्र सरकार से सभी नावों को छोड़ने के लिए मजबूत और समन्वित प्रतिक्रिया हेतु अनुरोध किया है।[69]

इस संबंध में, मछुआरों की दुर्दशा को दूर करने हेतु केंद्र व राज्य दोनों स्तरों पर भारत में कुछ पहले की गई हैं। जुलाई 2017 में भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा "नीली क्रांति" नामक गहरे समुद्र में मछली पकड़ने की योजना शुरू की गई थी।[70] इस 1,500 करोड़ की परियोजना का उद्देश्य मछुआरों को बॉटम ट्रॉलरों को लंबे गहरे समुद्री लाइनरों में बदलने में मदद करना था। जनवरी 2022 में तमिलनाडु सरकार ने 125 मछली पकड़ने वाले नाव मालिकों को मुआवजे के रूप में 5.6 करोड़ रुपये की घोषणा की, जिनकी नावें श्रीलंकाई नौसेना द्वारा क्षतिग्रस्त कर दी गई थीं।[71] श्रीलंका ने 2017 में मत्स्य पालन एवं जलीय संसाधन अधिनियम के माध्यम से बॉटम ट्रॉलिंग पर प्रतिबंध लगा दिया था। उत्तर के श्रीलंकाई मछुआरों ने भी अपनी दुर्दशा को सामने रखने हेतु एक उत्तरी मछुआरा कार्रवाई समिति (एनपीएफएसी) का गठन किया है। समिति द्वारा रखी गई कुछ मांगों में शामिल हैं, "सभी ऋणों को समाप्त करना, मछली पकड़ने हेतु दमनकारी सैन्य पास प्रणाली को समाप्त करना और मछली का एक गारंटीकृत मूल्य और बहुराष्ट्रीय मछली पकड़ने की उद्योग कंपनियों का राष्ट्रीयकरण करना।"[72] जाफना में प्रादेशिक जल के पास भारतीय मछुआरों की कार्रवाई के खिलाफ विरोध देखा जा रहा है।

मछुआरों का मुद्दा सीमा के दोनों ओर के मछुआरा परिवारों की आजीविका से जुड़ा एक मानवीय मुद्दा है। बॉटम ट्रॉल्स और आईयूयू फिशिंग का इस्तेमाल न केवल समुद्री पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है, बल्कि उत्तरी श्रीलंकाई तमिल मछुआरों की आजीविका को भी प्रभावित कर रहा है, जो तीन दशक लंबे संघर्ष का खामियाजा भुगत रहे हैं। समुदाय मुख्यतः अपनी आजीविका के प्राथमिक स्रोत के रूप में समुद्र पर निर्भर है। इस मुद्दे को हल करने हेतु दोनों देश गहरे समुद्र में मछली पकड़ने और आजीविका के वैकल्पिक तरीकों जैसे वैकल्पिक समाधानों पर काम कर रहे हैं, लेकिन इस मुद्दे के स्थायी समाधान पर पहुंचने से अभी बहुत दूर हैं।

<u>बहुसंख्यक धारणा</u>

श्रीलंका में भारत के बारे में धारणा एक अन्य समस्या है, जिसकी वजह से भारत और श्रीलंका के बीच सुरक्षा गतिशीलता को आकार मिला है। ज्यादातर मामलों में संबंधों की विषम प्रकृति ने भारत-श्रीलंका संबंधों के जनता के दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐतिहासिक एवं स्वतंत्रता के बाद के आधार पर भारत से श्रीलंका की संप्रभुता को स्थायी खतरा आर्थिक एवं निवेश क्षेत्रों के साथ-साथ सुरक्षा क्षेत्र में भारत की भूमिका के सामान्य विरोध में परिलक्षित होता है। श्रीलंका के जातीय मुद्दे में भारत की भागीदारी ने भी ज्यादातर स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में भय को मजबूत किया है। श्रीलंका में भारत की भूमिका के संबंध में विश्वास की सामान्य कमी भारत द्वारा सशस्त्र संघर्ष के बाद की सुलह प्रक्रिया को दिए गए समर्थन और महत्वपूर्ण रूप से आर्थिक और निवेश सहयोग में वृद्धि के बावजूद स्पष्ट है।

श्रीलंका को भारत द्वारा कई प्रकार की विकास सहायता प्रदान की जाती है और भारत की "श्रीलंका के प्रति समग्र प्रतिबद्धता 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है, जिसमें से लगभग 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर अनुदान सहायता है और शेष रियायती ऋण है। कुल मिलाकर, 2.68 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य की 13 लाइन ऑफ क्रेडिट श्रीलंका को प्रदान की गई हैं।[73] 2017 के बाद से, भारत ने श्रीलंका के साथ लगभग 20 समझौते किए हैं जिनमें सामुदायिक विकास परियोजनाओं, आर्थिक सहयोग परियोजनाओं, बुनियादी ढांचे के उन्नयन एवं कृषि के क्षेत्र आदि सहित कई क्षेत्रों को कवर किया गया है...[74] भारत की प्रमुख परियोजना, 1990 आपातकालीन एम्बुलेंस सेवाएं देश भर में प्रदान की जाती हैं, जिसकी कुल लागत 22.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। इस परियोजना के तहत भारत द्वारा करीब 300 एंबुलेंस प्रदान किए गए।[75]

> ज्यादातर मामलों में संबंधों की विषम प्रकृति ने भारत-श्रीलंका संबंधों के जनता के दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐतिहासिक एवं स्वतंत्रता के बाद के आधार पर भारत से श्रीलंका की संप्रभुता को स्थायी खतरा।

हालाँकि, विश्वास की कमी के कारण विगत दशक में कुछ सहमत परियोजनाओं पर निर्णय बदल गए। सत्ता में आने के बाद एसएलपीपी सरकार ने राष्ट्रीय नीतिगत रूपरेखा दस्तावेज तैयार किया, जिसका शीर्षक था "समृद्धि एवं वैभव का दृश्य" जो दिसंबर 2019 में जारी किया गया था। इस रूपरेखा में कहा गया है कि श्रीलंका रणनीतिक संपत्तियों एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों के स्वामित्व को सुनिश्चित करने हेतु 'दोस्ताना और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति' का पालन करेगा।[76] इसमें "विगत पांच वर्षों में हस्ताक्षरित हानिकारक द्विपक्षीय व्यापार समझौतों पर पुनः विचार करने और घरेलू अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक किसी भी समझौते को रोकने की आवश्यकता का जिक्र किया गया।"[77] सबसे बड़ा मामला कोलंबो पोर्ट पर ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ईसीटी) विकसित करने हेतु भारत, श्रीलंका और जापान के बीच सार्वजनिक-निजी भागीदारी वाले 2019 के त्रिपक्षीय समझौते को रद्द करने का था, जिससे श्रीलंका के दो सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय साझेदारों भारत और जापान को काफी निराशा हुई।[78] श्रीलंकाई कैबिनेट ने बाद में 2021 में बंदरगाह के वेस्ट कंटेनर टर्मिनल को भारत की निजी बंदरगाह विकास कंपनी, अडानी समूह को देने का फैसला किया। यहां तक कि भारत द्वारा त्रिंकोमाली ऑयल टैंक फार्म के विकास के मामले में भी भारत की भागीदारी का पर्याप्त विरोध हुआ था। श्रीलंका के पूर्व में स्थित प्राकृतिक बंदरगाह, त्रिंकोमाली भारत की सुरक्षा हेतु बहुत महत्वपूर्ण है। कई वर्षों से, रणनीतिक संपत्तियों के विकास में भारत को शामिल करने की श्रीलंका की अनिच्छा एक

> भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक हितों, राजनीतिक गणनाओं के साथ-साथ भारत की भूमिका के प्रति विश्वास की कमी ने भारत के प्रति जोखिम की धारणा को कम करने में बाधा के रूप में काम किया।

चुनौती रही है। लेकिन आर्थिक और निवेश सहयोग के संबंध में 2022 की शुरुआत में कुछ प्रगति हुई है, जब भारत और श्रीलंका 50 साल की अवधि में खेत में 99 टैंकों में से 61 को संयुक्त रूप से विकसित/नवीनीकृत करने पर सहमत हुए। 99 में से 24 टैंक सीलोन पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन द्वारा और अन्य 14 लंका इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (एलआईओसी) द्वारा विकसित किए जाएंगे। भारतीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। टैंकों का संयुक्त विकास 29 जुलाई, 1987 के भारत-श्रीलंका समझौते का हिस्सा था।

भारत और जापान की मदद से 2021 में ईसीटी विकसित न करने का एसएलपीपी सरकार का निर्णय, देश के दक्षिण हिस्से में भारत के निवेश को लेकर संदेह से प्रभावित था। जेवीपी ने तेल टैंक फार्मों के आधुनिकीकरण को दिल्ली का एक "विस्तारवादी" और द्वीप राष्ट्र में स्थायी आधार बनाने की दिशा में एक कदम के रूप में माना।[79] अतीत में, इसने द्वीप राष्ट्र में आईपीकेएफ की उपस्थिति का जोरदार विरोध किया था। आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग समझौता (ईटीसीए) और व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) प्रस्ताव जेवीपी, एसएलपीपी जैसे दलों और कुछ पेशेवर समूहों द्वारा श्रीलंका की अर्थव्यवस्था हेतु कथित खतरा बताए जाने के कारण लागू नहीं हो सके। सामान्य तौर पर, भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक हितों, राजनीतिक गणनाओं के साथ-साथ भारत की भूमिका के प्रति विश्वास की कमी ने भारत के प्रति जोखिम की धारणा को कम करने में बाधा के रूप में काम किया।

कुछ असफलताओं के बावजूद, दोनों देश द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने के महत्व को समझते हैं, और 2021 में भारत में श्रीलंका मिशन द्वारा जारी नीति दस्तावेज इस दिशा में एक सकारात्मक कदम था। भारत में श्रीलंका के राजनयिक मिशनों के लिए नीति दस्तावेज का शीर्षक "एकीकृत देश रणनीति" था। यह दस्तावेज कई मायनों में महत्वपूर्ण था क्योंकि इसमें भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों से श्रीलंका की उम्मीदों को दिखाया गया था। पॉलिसी दस्तावेज में जिन सात लक्ष्यों का उल्लेख किया गया है, उनमें राजनीतिक स्तर पर बातचीत में वृद्धि के माध्यम से मौजूदा करीबी द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक स्तर तक लाने; निवेश में वृद्धि; रणनीतिक सहयोग व रक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने; संस्कृति, शिक्षा व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना; सार्वजनिक कूटनीति के माध्यम से भारत में श्रीलंका की अधिक सकारात्मक छवि पेश करना; कनेक्टिविटी और समुद्री संसाधनों की रक्षा में श्रीलंका के हितों को बढ़ावा देने की बात की गई है।[80]

बाह्य कारक

<u>हिंद महासागर की भू-राजनीति: नई वास्तविकताओं के साथ तालमेल</u>

2009 में सशस्त्र संघर्ष की समाप्ति के पश्चात, भारत ने आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिरता हासिल करने के प्रयासों में श्रीलंका की मदद और रक्षा व सुरक्षा सहयोग बढ़ाने का आह्वान किया जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएं कम हो सके। हालाँकि, क्षेत्र की भू-राजनीति और हिंद महासागर की शांति व सुरक्षा के प्रति संबंधित दृष्टिकोण, लक्ष्यों और हितों के साथ, अभिसरण के साथ-साथ विचलन भी हुआ।

आईओआर में, ऐसे कई देश हैं जो इस क्षेत्र में कई गठबंधनों और अन्य माध्यमों से अपने हितों को आगे बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। इस क्षेत्र के प्रमुख देश चीन, अमेरिका और भारत हैं। जापान और ऑस्ट्रेलिया ने भी बड़े इंडो-पैसिफिक ढांचे में इस क्षेत्र के साथ जुड़ने में गहरी दिलचस्पी दिखाई है। अमेरिका तथा उसके सहयोगियों का मानना

है कि यह क्षेत्र एशिया में, विशेषतः भारत और चीन के बीच महान शक्ति की प्रतियोगिता का एक द्वितीयक क्षेत्र बन सकता है।[81] आईओआर में मौजूद शक्तियों के लिए संचार के समुद्री लेन (एसएलओसी) को सुरक्षित करना व्यापार और ऊर्जा के निर्बाध प्रवाह हेतु महत्वपूर्ण है। स्वेज नहर, होर्मुज जलडमरूमध्य, और मलक्का जलडमरूमध्य और सिंगापुर जैसे क्षेत्र में स्थित चेक प्वाइंट्स की रक्षा करना भी एक प्राथमिकता है।

इस क्षेत्र में दुनिया की 35% आबादी रहती है और इस क्षेत्र के तटीय राज्यों का 2021 में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा 18.5% है। लगभग 120,000 पोतों के सालाना यहां से गुजरने, दुनिया के दो-तिहाई तेल लदान, बल्क कार्गो यातायात का एक-तिहाई और दुनिया के आधे कंटेनर लदान के परिवहन वाले इसके जल के साथ, हिंद महासागर का प्रमुख शक्तियों के लिए सामरिक बढ़ा है।[82] व्यापार के संदर्भ में यह क्षेत्र एक अनूठी स्थिति पेश करता है। हिंद महासागर के देशों के बीच व्यापार कुल व्यापार का केवल 20% है, जबकि शेष 80% क्षेत्र के बाहर ले जाया जाता है।[83] महाद्वीप के स्तर पर, एशियाई देशों ने 2021 के दौरान 563.8 बिलियन डॉलर या दुनिया भर की खरीद का 54.8% की लागत से आयातित कच्चे तेल का उच्चतम डॉलर खरीदा। 26.7% के साथ एशिया के बाद यूरोपीय देश हैं, जबकि उत्तरी अमेरिका की हिस्सेदारी 14.6% है।[84] पेट्रोलियम निर्यातक देशों के लिए संगठन (ओपेक) चीन (50%), भारत (68.4%) और अमेरिका (17.4%) के लिए कच्चे तेल के आयात का मुख्य स्रोत है।[85] आईओआर में प्रति व्यक्ति आय 2017 और 2025 के बीच "3200 अमेरिकी डॉलर से 6150 अमेरिकी डॉलर तक लगभग दोगुनी होने की उम्मीद है, जिससे यह एक ऊपरी-मध्य आय क्षेत्र बन जाएगा।"[86] क्षेत्र की सामरिक स्थिति एवं महत्वपूर्ण संसाधन जैसे कोयला, तांबा, हीरा, प्राकृतिक गैस आदि अन्य क्षेत्रीय शक्तियों को आकर्षित करते हैं। ऑस्ट्रेलिया, भारत और इंडोनेशिया के पास सबसे बड़ा अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) है, जो आईओआर के ईईजेड का आधा हिस्सा है।[87] गैर-पारंपरिक चुनौतियों से निपटना एक अन्य महत्वपूर्ण घटक है।

चीन का उदय और इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण समुद्री बंदरगाहों में इसका बढ़ता रणनीतिक निवेश एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है जो पिछले दशक में भारत तथा अमेरिका जैसे देशों द्वारा आईओआर की ओर नीति का मुख्य प्रेरक रहा है। ऐसा माना जाता है कि दक्षिण एशिया में चीन की दिलचस्पी काफी हद तक ऊर्जा और खनिज संसाधनों और हिंद महासागर तक पहुंच से प्रेरित है।[88] चीन के इंडो-पैसिफिक देशों के साथ भू-सामरिक प्रतिस्पर्धा, चीन उस मुखर

चीन का उदय और इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण समुद्री बंदरगाहों में इसका बढ़ता रणनीतिक निवेश एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है जो पिछले दशक में भारत तथा अमेरिका जैसे देशों द्वारा आईओआर की ओर नीति का मुख्य प्रेरक रहा है।

भूमिका को नज़रअंदाज़ करना असंभव बनाता है जो चीन इस क्षेत्र में निभाने को तैयार है। आईओआर में, चीन विशेषतः अपने पड़ोस में भारत की रणनीतिक गणनाओं में एक बड़ा कारक है।

2017 में आयोजित बीआरआई फोरम में भारत अनुपस्थित था जिसमें श्रीलंका मौजूद था। भारत ने यह कहते हुए फोरम में शामिल न होने का बचाव किया कि इसकी कनेक्टिविटी पहल "सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय मानदंडों, सुशासन, कानून के प्रशासन, खुलेपन, पारदर्शिता व समानता पर आधारित होनी चाहिए। कनेक्टिविटी पहलों को उन परियोजनाओं से बचने हेतु वित्तीय उत्तरदायित्व के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए जो समुदायों पर निरंतर ऋण बोझ पैदा करेंगे; और इसे ऐसे तरीके से आगे बढ़ाया जाना चाहिए जो संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करता हो।"[89]

2009 के पश्चात

भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता

अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति 2021 दस्तावेज़ में बढ़ते चीन की अमेरिका की चिंता को समझाया गया है। इसमें कहा गया है कि, "अमेरिका को इस वास्तविकता को मान लेना चाहिए कि दुनिया भर में शक्ति का वितरण बदल रहा है, जिससे नए खतरे पैदा हो रहे हैं। चीन, विशेषतः, तेजी से अधिक मुखर हो गया है। यह एकमात्र प्रतियोगी है जो स्थिर व खुली अंतरराष्ट्रीय प्रणाली हेतु चुनौती को बढ़ाने के लिए अपनी आर्थिक, कूटनीतिक, सैन्य एवं तकनीकी शक्ति को संयोजित करने में सक्षम है।[90] दूसरी ओर, बीआरआई ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पैठ बना ली है और और 60 देशों में निवेश में 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर जोड़ने का अनुमान है।[91] इसलिए, यूएस की इंडो-पैसिफिक दृष्टि, चतुर्भुज सुरक्षा संवाद, जिसे क्वाड कहा जाता है, ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम तथा संयुक्त राज्य अमेरिका (एयूकेयूएस) के बीच त्रिपक्षीय सुरक्षा समझौता और जी7 की 2022 में 600 बिलियन डॉलर की पहल, ग्लोबल इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड इन्वेस्टमेंट (पीजीआईआई) हेतु साझेदारी, को इसक्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में देखा जाता है।

इस क्षेत्र के साथ अमेरिका तथा चीन जैसी प्रमुख शक्तियों के जुड़ाव को इन शक्तियों यानी एशिया की विकसित विदेश नीति की रूपरेखा के व्यापक संदर्भ में भी देखा जा सकता है। ओबामा प्रेसीडेंसी एवं एशिया रीएश्योरेंस इनिशिएटिव्स एक्ट (एआरआईए) के तहत अमेरिका की धुरी से एशिया (एशिया के लिए पुनर्संतुलन) विचार, एवं चीन

> सामरिक वातावरण सुरक्षा गतिशीलता को प्रभावित करते हुए हिंद महासागर के प्रति भारत और श्रीलंका के दृष्टिकोण में विचलन और अभिसरण भी लाता है।

की विदेश नीति "कॉमनिटी ऑफ कॉमन डेस्टिनी" पर जोर इस संबंध में उदाहरण हैं, जो इंडो-पैसिफिक में एशिया एवं देशों के साथ जुड़ाव को पुनः परिभाषित करना चाहते हैं।

अमेरिका ने अपनी भारत-प्रशांत रणनीति के तहत एशिया के साथ अपने संबंधों को प्राथमिकता दी।[92] दूसरी ओर, चीन की विदेश नीति में नया राजनयिक ढांचा विकसित करने की बात की गई है, जिसे "चीनी विशेषताओं वाली प्रमुख शक्ति कूटनीति" कहा जाता है। इस नीति की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं इसकी विदेश नीति को आगे बढ़ाने में सशस्त्र बलों की सक्रिय भूमिका; वन बेल्ट, वन रोड (ओबीओआर) पहल के तहत उच्च गुणवत्ता का विकास; और समान विचारधारा वाले देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित करना शामिल है।[93] अपनी आक्रामक वैश्विक पहुंच के अंतर्गत चीन ने प्रभावी समुद्री, वायु व भूमि संचालन हेतु अपने रक्षा बलों और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) का आधुनिकीकरण किया है। चीन एशिया-प्रशांत समुदाय को साझा नियति वाला समुदाय मानता है। हालांकि, प्रमुख शक्तियों के बीच आर्थिक एवं सामरिक प्रतिस्पर्धा से क्षेत्रीय सुरक्षा में अनिश्चितता आती है।[94] भारत और श्रीलंका दोनों के संबंधित हिंद महासागर दृष्टिकोण इस रणनीतिक माहौल में काम कर रहे हैं। सामरिक माहौल सुरक्षा गतिशीलता को प्रभावित करते हुए हिंद महासागर के प्रति भारत और श्रीलंका के दृष्टिकोण में विचलन एवं अभिसरण भी लाता है।

प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण: विचलन एवं अभिसरण

भारत की समुद्री रणनीति पर के.एम. पणिक्कर ने तर्क दिया कि भारत का भविष्य हिंद महासागर पर निर्भर है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने किसी भी अन्य क्षेत्रीय शक्तियों की उपस्थिति का विरोध किया; इसका उदाहरण 1968 में आईओआर में रूस का प्रवेश और 1970 में अंग्रेजों द्वारा डिएगो गार्सिया को संयुक्त राज्य अमेरिका को पट्टे पर देना था। अपनी सुरक्षा जरूरतों को महसूस करते हेतु भारत ने इस क्षेत्र के राज्यों के साथ सुरक्षा संबंध बनाने की कोशिश की और सुरक्षा खतरों का उचित जवाब दिया। 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ के समर्थन में मॉरीशस में भारत का हस्तक्षेप, 1984 में श्रीलंका में भारत का हस्तक्षेप, राष्ट्रपति अल्बर्ट रेने को बचाने हेतु 1986 में सेशेल्स में गुप्त हस्तक्षेप और 1988 में ऑपरेशन कैक्टस, जिसने तत्कालीन राष्ट्रपति अबदुल गयूम की सरकार को श्रीलंकाई विद्रोही समूह पीपुल्स लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन ऑफ तमिल ईलम (पीएलओटीई) से बचाया गया था, इस क्षेत्र में भारत की मुखर भूमिका के कुछ उदाहरण हैं। भारतीय नौसेना ने भारत के हितों को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[95]

भारत की 1,200 से अधिक द्वीपों के साथ 7,500 किमी से अधिक तक फैली विशाल तटरेखा है, और लगभग 2 मिलियन वर्ग किमी का एक बड़ा विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) और लगभग 1.2 मिलियन वर्ग किमी महाद्वीपीय तट है।[96] इसलिए, भारत का समुद्री रणनीति दो मुख्य पहलुओं पर आधारित है। पहला 'पारंपरिक एवं गैर-पारंपरिक रेखाओं के धुंधलेपन के कारण बढ़ते खतरों से निपटने हेतु समुद्री सुरक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण और दूसरा, समुद्रों का उपयोग करने की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना।'[97] भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति को आकार देने वाले अन्य पहलू 'समग्र आईओआर में केंद्रीय स्थिति और पहुंच के साथ विशिष्ट समुद्री भूगोल; अपने समुद्री पड़ोसियों के साथ संबंध और राष्ट्रीय विकास हेतु समुद्र पर भारत की निर्भरता' है।[98] इस संबंध में, नेविगेशन की स्वतंत्रता को बनाए रखना और समुद्र में अंतरराष्ट्रीय कानूनी व्यवस्था को मजबूत करना, समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीएलओएस) का सम्मान करना, और सभी समुद्र में साझा खतरों का मुकाबला करने हेतु विभिन्न नौसेनाओं के बीच समन्वय अन्य विशेषताएं हैं जिन्हें भारत के समुद्री दृष्टिकोण में प्रमुखता दी जाती है। भारत की 'औद्योगिक एवं आर्थिक गतिविधि का एक बड़ा हिस्सा इसकी 7,516 किमी लंबी तटरेखा के 200 किमी के भीतर स्थित है, जिसमें परमाणु ऊर्जा स्टेशन भी शामिल हैं।'[99]

अतीत में, अन्य देशों के साथ सुरक्षा एवं रक्षा सहयोग को भारत के "रणनीतिक स्वायत्तता" के उद्देश्य के साथ असंगत माना जाता था।[100] लेकिन यह सोच बदल गई है और सुरक्षा सहयोग को रणनीतिक प्रभाव के विस्तार का एक तरीका समझा जाने लगा है।[101] इस विश्वास के हिस्से के रूप में, भारत ने सुरक्षा समस्याओं का जवाब देने हेतु अपने रक्षा बलों का आधुनिकीकरण किया और आईओआर में छोटे राष्ट्रों के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया जैसी मध्यम शक्तियों के साथ सुरक्षा संबंधों को विकसित करने की कोशिश की।

समुद्री सुरक्षा बढ़ाने हेतु क्षेत्रीय सहकारी दृष्टिकोण जैसे 'मिलन', हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस), और हिंद महासागर क्षेत्रीय संघ (आईओआरए) को भारत के समुद्री हितों को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण माना जाता है। परियोजना "मौसम" और मिशन सागर (क्षेत्र में सभी की सुरक्षा और विकास) अन्य महत्वपूर्ण नीतिगत ढाँचे हैं जिनका उद्देश्य क्षेत्र के राज्यों, विशेषतः भारत के समुद्री पड़ोसियों और द्वीपीय राज्यों के साथ आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करना है।[102] आसियान और 55.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश (अप्रैल 2019 से मार्च 2022 तक), और कनेक्टिविटी पहल भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।[103]

इतिहास की हिचकिचाहटों को दूर करते हुए भारत नई सामुद्रिक रणनीतिक सोच के अंतर्गत अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी को गहरा करने की कोशिश कर रहा है। इस साझेदारी का एक महत्वपूर्ण 'स्तंभ खुले, स्थिर,

सुरक्षित और समृद्ध भारत-प्रशांत क्षेत्र का साझा दृष्टिकोण है।'[104] अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति में भारत को "दक्षिण एशिया और हिंद महासागर में अग्रणी देश, क्वाड एवं अन्य क्षेत्रीय मंचों की प्रेरक शक्ति और क्षेत्रीय विकास का एक इंजन" बताया गया है।[105] इसलिए, अमेरिका 'क्षेत्र में सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका' का समर्थन करने हेतु तैयार है।[106] 1992 में शुरू हुए मालाबार अभ्यास ने भारत और अमेरिका की नौसेनाओं को सतह-विरोधी, हवा-विरोधी एवं पनडुब्बी-रोधी युद्ध अभ्यास, युद्धाभ्यास और युद्ध पोतों के बीच सामरिक अभ्यास का एक मंच प्रदान किया। विगत वर्षों में, ऑस्ट्रेलिया और जापान और सिंगापुर भी अभ्यास में शामिल हुए।

इस संदर्भ में, 2015 में लगभग तीन दशकों के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की सेशेल्स और श्रीलंका की यात्रा को यह संदेश देने में महत्वपूर्ण माना गया था कि 'हिंद महासागर से संबंधित भारत की दृष्टि किसी भी देश के खिलाफ

> इतिहास की हिचकिचाहटों को दूर करते हुए भारत नई सामुद्रिक रणनीतिक सोच के अंतर्गत अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी को गहरा करने की कोशिश कर रहा है। इस साझेदारी का एक महत्वपूर्ण 'स्तंभ खुले, स्थिर, सुरक्षित और समृद्ध भारत-प्रशांत क्षेत्र का साझा दृष्टिकोण है।'

निर्देशित नहीं है और यह समावेशी है।'[107] ऐसा माना जाता है कि भारत का "नेबरहुड फर्स्ट" दृष्टिकोण उपमहाद्वीप के आर्थिक एवं सामाजिक संबंधों का पुनर्निर्माण कर सकता है और भारत के दक्षिण में समुद्री स्थान को भारत की सुरक्षा करने में एकीकृत कर सकता है।[108] आईओआर में भारत की भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाने हेतु भारत ने सीमा पार समुद्री सुविधाओं में सुधार के लिए लाइन ऑफ क्रेडिट बढ़ा कर रहा है। श्रीलंका की तरह, भारत भी चाहता है कि हिंद महासागर प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा न बने।[109]

हिंद महासागर में अपनी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति को देखते हुए, श्रीलंका ने घरेलू हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी विदेश नीति को ढाल कर दक्षिण एशियाई सुरक्षा गतिशीलता में अपना स्थान बनाने की कोशिश की। उदाहरण के लिए, 1956 तक, श्रीलंका के कम्युनिस्ट ब्लॉक के साथ कोई राजनयिक संबंध नहीं थे, लेकिन घरेलू खाद्य जरुरत को पूरा करने हेतु 1952 में चीन के साथ हस्ताक्षरित रबड़ और चावल समझौता इसका अपवाद बन गया था। अमेरिका ने क्षेत्र में अपने सुरक्षा उद्देश्यों की पूर्ति और दूसरे विश्व युद्ध के दौरान ईरानविला, त्रिंकोमाली में वॉयस ऑफ अमेरिका (वीओए) ट्रांसमिशन टावर के माध्यम से अन्य देशों को अपने विचारों का प्रचार करने हेतु श्रीलंका का उपयोग किया।[110] एसएलएफपी सरकार के नेतृत्व में एसडब्ल्यूआरडी भंडारनायके ने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सुरक्षा संबंधों को त्याग कर गैर-संरेखण आंदोलन (एनएएम) का समर्थन किया, जो ब्रिटेन के साथ समझौते के अनुसार श्रीलंका की शीत युद्ध की प्रासंगिकता के अनुरुप था।[111] साथ ही, श्रीलंका ने 1975 में कोलंबो बंदरगाह में अमेरिकी सातवें बेड़े से संबंधित अमेरिकी युद्धपोतों को अनुमति दी। प्रधानमंत्री सिरीमावो भंडारनायके ने इस निर्णय का बचाव यह कहते किया कि, "यह दौरा आईओआर के किसी भी तटीय या भीतरी इलाकों के खिलाफ खतरे या बल के उपयोग से जुड़ा नहीं था।"[112] सरकार द्वारा उठाए गए रुख की विपक्षी लंका समा समाज पार्टी (एलएसएसपी) ने आलोचना की, क्योंकि यह 1970 के दशक में संयुक्त राष्ट्र में श्रीलंका द्वारा प्रचारित हिंद महासागर के शांति क्षेत्र (आईओजेडपी) के विचार से मेल नहीं खाती थी।

विगत कुछ वर्षों में, अमेरिका, चीन तथा भारत के बीच आईओआर में सूक्ष्म भू-राजनीतिक और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा

> विगत कुछ वर्षों में, अमेरिका, चीन तथा भारत के बीच आईओआर में सूक्ष्म भू-राजनीतिक और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को श्रीलंका ने क्षेत्र में अपने सुरक्षा हितों के लिए संभावित खतरा बताया है।

को श्रीलंका ने क्षेत्र में अपने सुरक्षा हितों के लिए संभावित खतरा बताया है। श्रीलंका के अनुसार, 'व्यापक सुरक्षा संरचना एवं क्षेत्र के सुरक्षा मुद्दों को संबोधित करने का संस्थागत ढांचा न होना एक गंभीर समस्या बनी हुई है।'[113] ऐसा विचार है कि, भौगोलिक-ग्राफिकल लाभ होने के बावजूद, श्रीलंका आंतरिक जातीय मुद्दों के कारण बहुत लंबे समय तक अपनी स्थिति का लाभ उठाने में असफल रहा। ऐसा माना जाता है कि 'नियम-आधारित व्यवस्था और अपनी स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु श्रीलंका को छोटे राष्ट्र के रूप में अपनी अंतर्निहित सीमाओं को पहचानना चाहिए और सैन्य व आर्थिक दृष्टि से कई देशों के साथ जुड़ाव की सक्रिय रणनीति अपनानी चाहिए।[114] नियम-आधारित व्यवस्था पर श्रीलंका इसलिए बल दे रहा है कि वह एक द्वीप राष्ट्र के रूप में समुद्र में टकराव की स्थिति नहीं झेल सकता। नियम-आधारित व्यवस्था पर बल देने की दिशा में श्रीलंका ने मार्च 2021 में जकार्ता कॉनकॉर्ड पर हस्ताक्षर किए, जिसने "लोकतंत्र की संस्कृति" के रूप में नेविगेशन की स्वतंत्रता की पुष्टि की।[115]

इसलिए, युद्ध के बाद श्रीलंका ने क्षेत्र में मौजूद प्रमुख शक्तियों के बीच बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने में विशेष रुचि दिखाई।[116] उदाहरण के लिए, श्रीलंकाई नौसेना ने 2010 से वार्षिक गॉल डायलॉग आयोजित करने की पहल की है। इस संवाद को क्षेत्र में समुद्री शक्तियों के बीच अविश्वास को कम करने के साथ-साथ सामान्य समुद्री सुरक्षा मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान करने के महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में देखा जाता है। अक्टूबर 2019 गॉल डायलॉग में 54 देशों के 148 प्रतिभागियों और भारत, अमेरिका तथा चीन सहित 17 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को एक साथ लाया गया। बिम्सटेक और आईओआरए को ऐसे दो संभावित संगठनों के रूप में देखा जाता है जो समुद्री सुरक्षा के मुद्दों से निपट सकते हैं। आईओआरए समुद्री सुरक्षा एवं बचाव (एमएसएस) कार्य समूह की पहली बैठक की अध्यक्षता श्रीलंका ने 8-9 अगस्त 2019 को की, जिसमें आईओआरए के सदस्य देशों और आईओआरए सचिवालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले 22 विदेशी प्रतिनिधियों ने भाग लिया।[117]

विभिन्न मंचों पर हिंद महासागर में तटीय राज्यों को लामबंद करने में अग्रणी भूमिका निभाने के अलावा, श्रीलंका ने विभिन्न मंचों पर हिंद महासागर के अपने दृष्टिकोण को सामने रखने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, इसने 2018 में 11-12 अक्टूबर को ट्रैक 1.5 सम्मेलन 'द इंडियन ओशन: डिफाइनिंग अवर फ्यूचर' की मेजबानी की। सम्मेलन में 300 वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों और 40 से अधिक हिंद महासागर के तटीय राष्ट्रों के थिंक टैंक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें खुले, स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण हिंद महासागर पर जोर दिया गया। श्रीलंका के अनुसार, ये मंच महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वह अकेले देश के बाहरी जोखिमों को संबोधित करने में असमर्थ है और सम्मेलन बुलाकर "इन जोखिमों के प्रभाव को समझने तथा उन्हें अन्य देशों के साथ पारदर्शी और व्यवस्थित तरीके से संबोधित करने का प्रयास किया।"[118] श्रीलंका की राष्ट्रीय आर्थिक विकास नीतियों में भी विकास योजना में हिंद महासागर को महत्वपूर्ण घटक माना गया है।[119]

<u>समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग में वृद्धि</u>

विगत दशक में, भारत तथा श्रीलंका के बीच सैन्य प्रशिक्षण और कूटनीति, रक्षा उपकरणों की आपूर्ति और दोनों नौसेनाओं के बीच समुद्री सहयोग के रूप में सुरक्षा सहयोग बढ़ा है।[120] समुद्री सुरक्षा पर ध्यान देते हुए वर्ष 2011 में समुद्री सुरक्षा पर पहली त्रिपक्षीय बैठक को बढ़ावा दिया गया। श्रीलंका, भारत तथा मालदीव ने सुरक्षा क्षेत्र में चिंताओं और सहयोग के संभावित क्षेत्रों की पहचान करने हेतु सक्रिय भागीदारी की है। माले में सरकार बदलने के बाद, छह

'श्रीलंका के लिए, कॉन्क्लेव में भागीदारी ने युद्ध के बाद की सुरक्षा प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रदान किया। श्रीलंका बढ़ते डिजिटलीकरण और सोशल मीडिया के अपनी सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति सचेत है।

साल के अंतराल के पश्चात नवंबर 2020 में चौथी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) स्तर की त्रिपक्षीय सहयोग बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में, कोलंबो सुरक्षा कॉन्क्लेव स्थापित करने का निर्णय लिया गया।[121] एनएसए और डिप्टी एनएसए स्तर की बैठकें लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई हेतु आयोजित की गईं। 1 मार्च 2022 को कोलंबो में श्रीलंकाई नौसेना मुख्यालय में समुद्री सुरक्षा सहयोग पर त्रिपक्षीय सचिवालय की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है। मॉरीशस जैसे क्षेत्र के अन्य महत्वपूर्ण समुद्री देशों को शामिल करने हेतु कोलंबो सुरक्षा कॉन्क्लेव का विस्तार किया गया है। 9-10 मार्च 2022 को मालदीव में आयोजित 5वें कोलंबो सुरक्षा कॉन्क्लेव में बांग्लादेश और सेशेल्स को पर्यवेक्षकों के रूप में आमंत्रित किया गया था। सहयोग के जिन पांच प्रमुख क्षेत्रों पर देश काम करने हेतु सहमत हुए हैं वे हैं: समुद्री सुरक्षा और बचाव; आतंकवाद एवं कट्टरवाद का मुकाबला; तस्करी और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध का मुकाबला; साइबर सुरक्षा, महत्वपूर्ण अवसंरचना एवं प्रौद्योगिकी का संरक्षण, मानवीय सहायता और आपदा राहत।[122] 7 जुलाई 2022 को कोच्चि में आयोजित 6वें डिप्टी एनएसए स्तर के कोलंबो सुरक्षा कॉन्क्लेव में, समुद्री क्षमता निर्माण को सुरक्षा कॉन्क्लेव के अभिन्न अंग के रूप में मान्यता दी गई, जिसमें समुद्री क्षेत्र में जागरूकता (एमडीए) एवं प्रशिक्षण, पोतो की आवाजाही पर डेटा साझा करना, समुद्री तेल से होने वाले प्रदूषण पर प्रतिक्रिया सहयोग को बढ़ावा देना; टेबल टॉप अभ्यासों के ज़रिए द्विपक्षीय 'दोस्ती' (मित्रता) अभ्यासों का विस्तार करना; संपर्क के मौजूदा बिंदुओं के माध्यम से अवैध समुद्री गतिविधियों पर जानकारी साझा करना; और नीति एवं कानूनी मुद्दों पर केंद्रित त्रिपक्षीय उप-समूह का गठन करना शामिल है।[123]

श्रीलंका के लिए, कॉन्क्लेव में भागीदारी ने युद्ध के बाद की सुरक्षा प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रदान किया। श्रीलंका बढ़ते डिजिटलीकरण और सोशल मीडिया के अपनी सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति सचेत है। अप्रैल 2019 में सोशल मीडिया पर सक्रिय इस्लामिक स्टेट के आतंकी नेटवर्क के प्रभाव में श्रीलंकाई युवाओं द्वारा किए गए ईस्टर संडे बम विस्फोट ने श्रीलंका के युद्ध के बाद के समाज को हिलाकर रख दिया। इसके बाद भारत ने श्रीलंका की मदद की और 260 लोगों की जान लेने वाले घातक हमलों के बाद भारतीय प्रधानमंत्री श्रीलंका का दौरा करने वाले पहले विदेशी नेता थे।

सुरक्षा सहयोग में वृद्धि से गैर-पारंपरिक सुरक्षा (एनटीएस) खतरों का मुकाबला करने में भी सहयोग हुआ है। अकेले वर्ष 2021 में, नौसेना ने द्वीप जल एवं गहरे समुद्र में मादक पदार्थों के कई छापे मारे हैं और 15.86 बिलियन रुपये से अधिक मूल्य की अवैध दवाओं की एक बड़ी खेप जब्त की है।[124] 74 मौकों पर किए गए एंटी-ड्रग ऑपरेशन में, द्वीप जल और उच्च समुद्र दोनों में, श्रीलंकाई नौसेना ने 119 विदेशी और 22 स्थानीय संदिग्धों के साथ 1268 किलोग्राम से अधिक हेरोइन जब्त की है।[125]

हालाँकि, औपचारिक रक्षा समझौते की कमी की वजह से दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग बाधित नहीं हुआ है।[126] श्रीलंका भारत के रक्षा सहयोग का सबसे बड़ा लाभार्थी है।

हालाँकि, औपचारिक रक्षा समझौते की कमी की वजह से दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग बाधित नहीं हुआ है। श्रीलंका भारत के रक्षा सहयोग का सबसे बड़ा लाभार्थी है।

पिछले कुछ वर्षों में क्षमता निर्माण एवं आपदा प्रबंधन सहयोग के महत्वपूर्ण घटक रहे हैं। तमिलनाडु के वेलिंगटन स्टाफ कॉलेज में श्रीलंकाई रक्षा कर्मियों के प्रशिक्षण को तमिलनाडु के राजनीतिक दलों की आपत्तियों के कारण रद्द कर दिया गया था। 2013 से, श्रीलंकाई सशस्त्र बल कार्मिक (एसएलएएफ), मूलभूत व्यावसायिक सैन्य शिक्षा (पीएमई) पाठ्यक्रम में भाग नहीं ले रहे हैं।[127] तमिलनाडु की आपत्तियों के बावजूद, भारत विभिन्न सैन्य प्रतिष्ठानों जैसे राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज (एनडीए) में श्रीलंकाई अधिकारियों को प्रशिक्षित करता है। श्रीलंका के लगभग 60% सैन्यकर्मी भारत में यंग, जूनियर एवं सीनियर कमांड कोर्स करते हैं।[128] भारत ने 15 अगस्त 2002 को खोज एवं बचाव कार्यों के लिए श्रीलंका को एक डोर्नियर विमान उपहार में दिया। भारत तथा श्रीलंका के बीच वार्षिक रक्षा संवाद (एडीडी) 2012 में शुरू हुआ था। भारत श्रीलंका को रक्षा क्षेत्र में "प्राथमिकता भागीदार" मानता है।[129] त्रिपक्षीय समुद्री अभ्यास "दोस्ती", जो पिछले तीन दशकों से हो रही है, भारत, श्रीलंका और मालदीव के तट रक्षकों के बीच अंतर-क्षमता विकसित करने और सहयोग बढ़ाने में महत्वपूर्ण रही है।

"दोस्ती" अभ्यास का 15वां संस्करण नवंबर 2021 में आयोजित किया गया था। दोस्ती के अलावा मित्र शक्ति और स्लिनेक्स अभ्यास रक्षा सहयोग में मदद कर रहे हैं। श्रीलंका समुद्री सुरक्षा एवं रक्षा स्तंभ हेतु एक प्रमुख समन्वयक के रूप में आईओआरए में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। मार्च 2022 में श्रीलंका नौसेना मुख्यालय हेतु भारत से 6 मिलियन डॉलर के अनुदान के साथ एक समुद्री बचाव समन्वय केंद्र (एमआरसीसी) स्थापित करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। रक्षा सहयोग के इन तंत्रों से निश्चित रूप से एक-दूसरे की सुरक्षा आवश्यकताओं की समझ में सुधार हुआ है।

इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा सहयोग का एक सामान्य ढांचा तैयार करने में एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा हिंद महासागर का अ ज़ोन ऑफ पीस (जेडओपी) है, जिसे श्रीलंका ने 1960 और 70 के दशक में प्रचारित किया था। श्रीलंका ने भारतीय विदेश सचिव की कोलंबो यात्रा के दौरान अक्टूबर 2021 में प्रस्ताव हेतु भारत का समर्थन मांगा। यह अनुरोध श्रीलंका के "एक ओर चीन और दूसरी ओर भारत सहित अमेरिका के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच संघर्ष का रंगमंच बनने" को लेकर बढ़ती चिंताओं से उत्पन्न हुआ होगा।[130] ऐसा लगता है कि चीन के उदय और क्षेत्र में प्रमुख शक्तियों की बढ़ती रुचि जैसे विभिन्न कारकों के कारण भारत ने 2014 में गॉल डॉयलॉग में इस विचार का समर्थन किया था, लेकिन अभी तक इस विचार हेतु पूरी तरह से प्रतिबद्ध नहीं है।[131] 2014 में, एक चीनी पनडुब्बी श्रीलंका गई और उसी वर्ष श्रीलंका ने बीआरआई का समर्थन किया।

उपरोक्त घटनाक्रमों से ऐसा प्रतीत होता है कि क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता बनाए रखना दोनों देशों के लिए अपरिहार्य है और यह अलग-अलग सुरक्षा जरूरतों और हितों के बावजूद हिंद महासागर में सुरक्षा का साझा परिप्रेक्ष्य विकसित करने हेतु की गई विभिन्न पहलों में प्रकट हुआ है, जो बाहरी कारकों के साथ जुड़ाव में परिलक्षित होता है। इसलिए, नीचे दिए गए खंड में श्रीलंका के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रीय कारक अमेरिका और चीन के साथ जुड़ाव पर चर्चा की गई है।

क्षेत्रीय देशों के साथ श्रीलंका का जुड़ाव

श्रीलंका के लिए, 2009 के बाद के वर्ष महत्वपूर्ण थे क्योंकि इस दौरान वह अपनी विदेश और सुरक्षा नीति को युद्ध-रहित स्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु पुनर्गठित करने का प्रयास कर रहा था। श्रीलंका के नीति निर्माताओं का विचार है कि लगभग तीस वर्षों के जातीय संघर्ष के कारण, श्रीलंका ने आईओआर में अपनी अनूठी सामरिक भौगोलिक स्थिति का उपयोग करने के कई अवसरों को खो दिया है। इसलिए, इसे "'हिंद महासागर के केंद्र' और 'उपमहाद्वीप के प्रवेश द्वार' दोनों के रूप में दोहरी पहचान विकसित करनी चाहिए।"[132] इस दृढ़ विश्वास ने युद्ध के

बाद के श्रीलंका के बाहरी देशों के साथ-साथ इसकी आर्थिक नीतियों के साथ जुड़ाव हेतु प्रेरित किया। युद्ध के बाद के वर्षों में दुनिया के साथ श्रीलंका का जुड़ाव इस विश्वास पर

श्रीलंका ने वाणिज्यिक और हब कूटनीति पर केंद्रित सक्रिय विदेश नीति विकसित करने की कोशिश की। लेकिन इसकी घरेलू राजनीतिक स्थिति और क्षेत्र में बाहरी देशों की भूमिका के प्रति घरेलू प्रतिक्रिया के कारण इन लक्ष्यों को पूरी तरह से हासिल नहीं किया जा सका।

आधारित है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में तीन प्रमुख बदलाव हैं और श्रीलंका इन बदलावों के साथ तालमेल बिठाने हेतु तैयार है।[133] पहला एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की बढ़ती ताकत है, जिसमें भरोसेमंद विदेश नीति पहलों के माध्यम से चीन और भारत बड़ी भूमिका निभाने हेतु तैयार हैं। दूसरा नियम-आधारित व्यवस्था का कमजोर होना और तीसरा, बढ़ता डिजिटलीकरण एवं सुरक्षा पर इसका प्रभाव।[134] श्रीलंका के अनुसार ये बदलाव भारत, जापान और चीन जैसे देशों से बढ़ते निवेश और चीन एवं सिंगापुर के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) को अंतिम रूप देने के संदर्भ में सकारात्मक हैं। इसलिए, श्रीलंका ने वाणिज्यिक और हब कूटनीति पर केंद्रित एक सक्रिय विदेश नीति विकसित करने का प्रयास किया। लेकिन इसकी घरेलू राजनीतिक स्थिति और क्षेत्र में बाहरी देशों की भूमिका के प्रति घरेलू प्रतिक्रिया के कारण इन लक्ष्यों को पूरी तरह से हासिल नहीं किया जा सका।

अमेरिका

आंतरिक जातीय मुद्दों और मानवाधिकारों के उल्लंघन से संबंधित श्रीलंका पर अमेरिकी नीति भले ही नहीं बदली हो, लेकिन 2015 के बाद से, इसने श्रीलंका के साथ अपने संबंधों में विविधता लाने में रुचि दिखाई है। सामान्य तौर पर अमेरिकी ऋण का दायरा कृषि, स्वास्थ्य आदि जैसे छोटे क्षेत्रों तक सीमित है तथा मेगा विकास परियोजनाओं के लिए

अमेरिका श्रीलंका को समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र के निर्माण में साझा मूल्यों वाला भागीदार मानता है।

नहीं प्राप्त होता है।[135]

प्राथमिकताओं की सामान्यीकृत प्रणाली (जीएसपी) + अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) द्वारा श्रीलंका को दी गई रियायतें सुलह से संबंधित हैं। एनयूजी के गठन के बाद, अमेरिका ने अमेरिकी निवेश को प्रोत्साहित करने और वर्तमान व्यापार एवं निवेश फ्रेमवर्क समझौते (टीआईएफए) के दायरे का विस्तार करने की संभावना का पता लगाकर द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने का वादा किया।[136] अमेरिका के आउटरीच कार्यक्रम के अंतर्गत, श्रीलंका-यूएस पार्टनरशिप डायलॉग 2016 में शुरू किया गया था। चौथी पार्टनरशिप डायलॉग 23 मार्च 2022 को आयोजित किया गया था। श्रीलंका ने सितंबर 2016 में वाशिंगटन डीसी में आयोजित महासागरों के संरक्षण के उद्देश्य से 'अवर ओशन' सम्मेलन में भी भाग लिया था। अंतर्राष्ट्रीय विकास वित्त निगम (डीएफसी) ने ऋण में अपने पोर्टफोलियो को 265 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ा दिया है, जिसे श्रीलंका के लघु व मध्यम उद्यमों, विशेषतः महिलाओं के स्वामित्व

वाले व्यवसायों का समर्थन करने के लिए बनाया गया है।[137] अमेरिका ने अपने तीसरे हाई एंड्यूरेंस यूएस कोस्ट गार्ड कटर को यूएस अतिरिक्त रक्षा लेख कार्यक्रम के माध्यम से श्रीलंका में स्थानांतरित कर दिया है। श्रीलंका की समुद्री निगरानी क्षमता को सुदृढ़ करने और मानवीय एवं आपदा के बाद की जरूरतों की प्रतिक्रिया हेतु किंग एयर कार्यक्रम भी शुरु किया गया है। हाल के वर्षों में अमेरिकी पोतों और सैन्य अधिकारियों की यात्राएं, और आतंकवाद का मुकाबला, सीमा व और समुद्री सहयोग अमेरिका-श्रीलंका के आदान-प्रदान का एक अभिन्न अंग रहा है। अमेरिका ने 2016 में श्रीलंका की पहली समुद्री बटालियन के साथ संयुक्त अभ्यास का प्रशिक्षण किया और आयोजित किया। द्विपक्षीय विमानन संबंधों को आधुनिक बनाने और मजबूत करने और सभी कार्गो व अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन अवसरों का विस्तार करने के लिए यूएस-श्रीलंका ओपन स्काईज समझौता 2002 से लागू है।[138] अमेरिका इंडो-पैसिफिक को समृद्ध बनाने में श्रीलंका को साझा मूल्यों वाला एक भागीदार मानता है।[139]

श्रीलंका ने पश्चिमी देशों के साथ, विशेषतः अमेरिका के साथ अपने रक्षा संबंधों को बढ़ाने में भी रुचि दिखाई है। श्रीलंका और अमेरिका के बीच एक्विजेशन एंड क्रॉस-सर्विसेज एग्रीमेंट (एसीएसए) जिस पर 2007 में हस्ताक्षर किए गए थे और 2017 में नवीनीकरण किया गया था, कई मामलों में महत्वपूर्ण है। 2007 में समझौते पर हस्ताक्षर करते समय, अमेरिकी राजदूत रॉबर्ट ब्लेक ने कहा था, "श्रीलंका, प्रमुख समुद्री लेन के किनारे तथा भारत के दरवाजे पर स्थित है, सैन्य तत्परता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि राजनीतिक और सैन्य प्रयासों के रूप में नई सहस्राब्दी में एशिया पर ध्यान केंद्रित हो रहा है।"[140]

हालांकि, समझौते की धाराओं को सार्वजनिक नहीं किया गया था, जिससे समझौते को कई तरह की अटकलों को बढ़ावा मिला और क्या समझौता केवल अमेरिका के पक्ष में था, इसपर भी सवाल उठे। यह समझौता अमेरिकी संघीय कानून से जुड़ा है। यह दोनों देशों को रसद आपूर्ति, समर्थन और पुनः ईंधन भरण सेवाओं को स्थानांतरित करने एवं विनिमय करने की सुविधा देता है, जिससे एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अपने सैन्य अभियान में अमेरिका को लाभ मिलता है - विशेष रूप से यूएस पैसिफ़िक कमांड (यूएसपीएसीओएम) को, जो अब यूएस इंडो-पैसिफिक कमांड (यूएसइंडोपीएसीओएम) में है।[141] हालांकि 2007 एसीएसए अमेरिकी सैन्य जहाजों को श्रीलंकाई बंदरगाहों में 'वन-ऑफ़'

> श्रीलंका ने पश्चिम के साथ, विशेषतः अमेरिका के साथ अपने रक्षा संबंधों को बढ़ाने में भी रुचि दिखाई है।

आधार पर रुकने की अनुमति देता है, 2017 एसीएसए "ओपन एंडेड" प्रतीत होता है।[142]

रिपोर्ट्स के मुताबिक, श्रीलंका सरकार ने अमेरिका के साथ स्टेटस ऑफ फोर्सेज एग्रीमेंट (एसओएफए) जिसे विजिटिंग फोर्सेज एग्रीमेंट (वीएफए) के नाम से भी जाना जाता है, को नई शर्तों के साथ रिन्यू करने की भी कोशिश की। समझौते के प्रस्ताव को श्रीलंका के सुरक्षा हितों के खिलाफ बताया गया है, क्योंकि इसके प्रावधानों में अमेरिकी कर्मियों को विशेषाधिकार, छूट एवं प्रतिरक्षा शामिल है और श्रीलंका के क्षेत्र में अमेरिका द्वारा संचालित जहाजों एवं वाहनों की मुक्त आवाजाही की अनुमति देता है।[143] पहले एसओएफए पर 1995 में राष्ट्रपति कुमारतुंगा की सरकार द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। लेकिन 2020 के इस समझौते की धाराएँ एक समस्या हैं। जेवीपी ने 2020 में सरकार से इराक और ईरान के शीर्ष कमांडर कासिम सुलेमानी की हत्या का उदाहरण देते हुए एसओएफए और एसीएसए को

रद्द करने को कहा, जिसे इराक के साथ हस्ताक्षरित 2014 एसओएफए समझौते के माध्यम से प्राप्त विशेषाधिकारों के साथ अमेरिका द्वारा निष्पादित किया गया था।[144]

अमेरिका की ओर से मिलेनियम चैलेंज कॉरपोरेशन (एमसीसी) के प्रस्ताव को भी अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति के हिस्से के तौर पर देखा गया। कुछ लोगों ने तर्क दिया कि अगर श्रीलंका के लिए एमसीसी कॉम्पैक्ट अनुदान देश की संसद द्वारा अनुमोदित किया गया था, तो यह चीन के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा में श्रीलंका के विकास क्षेत्रों में अमेरिकी हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त करेगा, जिसके राजनीतिक परिणाम होंगे।[145] चूंकि एमसीसी कॉम्पैक्ट अनुदान श्रीलंका में परिवहन एवं बुनियादी ढांचे में सुधार से जुड़ा हुआ है, अमेरिकी सरकार के पास अचल संपत्ति के रिकॉर्ड का एक्सेस होगा, जिसमें वे भी रिकॉर्ड शामिल हैं जो चीन द्वारा पट्टे पर दिए गए हैं। नतीजतन, इससे अमेरिकी वाणिज्यिक उद्यमों को लाभ होगा और क्षेत्र में तैनात अमेरिकी बलों को खुफिया जानकारी मिलेगी।[146] एसीएसए (2017), एसओएफए (2020) और एमसीसी प्रस्ताव यूएस इंडो-पैसिफिक विजन का हिस्सा हैं। लेकिन दोनों समझौतों में पारदर्शिता का अभाव श्रीलंका के लिए चिंताजनक पहलू है। एसओएफए के घरेलू विरोध के कारण, तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पिओ को जून 2019 में कोलंबो की अपनी यात्रा रद्द करनी पड़ी। अमेरिका से जुड़ाव के प्रति घरेलू प्रतिक्रिया से यह भी पता चलता है कि श्रीलंकाई समाज अपने इस द्वीप राष्ट्र में प्रमुख शक्तियों की भूमिका के प्रति संवेदनशील है।

चीन

चीन कई मामलों में श्रीलंका का एक महत्वपूर्ण भागीदार है। चीन द्वारा श्रीलंका को "रणनीतिक सहयोग भागीदारी समझौते" के अनुरूप सहायता दी गई है, जिस पर चीनी राष्ट्रपति की कोलंबो यात्रा के बाद 2014 में हस्ताक्षर किए गए थे। भविष्य में चीन के साथ एफटीए की भी उम्मीद है। चीन के बीआरआई को श्रीलंका द्वारा दिए जाने वाले समर्थन से चिंता बढ़ गई है क्योंकि इससे चीन की सदियों पुरानी समुद्री सिल्क रुट पुनरुद्धार योजनाओं और हिंद

> चीन कई मामलों में श्रीलंका का एक महत्वपूर्ण भागीदार है। चीन द्वारा श्रीलंका को दी गई सहायता "रणनीतिक सहयोग साझेदारी समझौते" के अनुरूप है जिस पर 2014 में हस्ताक्षर किए गए थे।

महासागर क्षेत्र में घुसपैठ को गति मिलती है। श्रीलंका द्वारा बीआरआई को दिए गए समर्थन पर घरेलू तथा विदेश नीति दोनों का प्रभाव है। श्रीलंका ने युद्ध के बाद अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और आईओआर में एक केंद्र के रूप में उभरने हेतु इसका अनुसरण किया, और इसने भारत के प्रति संतुलन के कार्य के रूप में भी काम किया। युद्ध के बाद के वर्षों में, बंदरगाहों, सड़कों तथा रेलवे से लेकर नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं तक कई अवसंरचना परियोजनाओं को चीन द्वारा चीन के एक्ज़िम बैंक जैसे राष्ट्रिय वित्तीय संस्थानों के ज़रिए वित्त पोषित किया गया है। 99 वर्षों के लिए पट्टे पर दिए गए कोलंबो बंदरगाह, हंबनटोटा बंदरगाह और हंबनटोटा बंदरगाह औद्योगिक क्षेत्र, और कोलंबो बंदरगाह शहर को महत्वपूर्ण बीआरआई निवेश माना जाता है। इन निवेशों को मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और अन्य क्षेत्रों में भेजे जाने वाले चीन के निर्मित सामानों के भंडारण हेतु फ्लो-थ्रू केंद्रों के रूप में डिज़ाइन किया गया है।[147] श्रीलंका चीन द्वारा शुरू किए गए एशियाई विकास बैंक (एडीबी) का संस्थापक सदस्य बन गया। साथ ही, कुछ लोगों का तर्क है कि सामान्य तौर पर आंतरिक सुलह प्रक्रिया के प्रति चीन की उदासीनता ने निश्चित रूप से सिंहली राजनीतिक दलों को प्रभावित किया है और इसके परिणामस्वरूप चीन के योगदान को स्वीकार किया गया है।[148] इसलिए, श्रीलंका में आने वाले कई वर्षों तक ऋण के बोझ के बावजूद बीआरआई परियोजनाओं को उचित माना गया है।

हालाँकि, श्रीलंका द्वारा इस क्षेत्र में भारत के सुरक्षा हितों को ध्यान में रखने के निरंतर आश्वासन के बावजूद परियोजनाओं के कार्यान्वयन में पारदर्शिता तथा भविष्य में चीन द्वारा बंदरगाहों (नागरिक व सैन्य) के संभावित दोहरे उपयोग भारत की मुख्य चिंताएँ हैं। 2014 में, जब पश्चिमी देशों और भारत ने श्रीलंका को राजनीतिक समाधान तलाशने की दिशा में काम करने और सुलह पर प्रगति दिखाने हेतु प्रेरित किया, तो श्रीलंका ने 7-13 सितंबर 2014 और 31 अक्टूबर-6 नवंबर 2014 को कोलंबो बंदरगाह पर दो चीनी पनडुब्बियों को जहाज गोदाम में खड़े करने की अनुमति दी। श्रीलंका में हंबनटोटा पोर्ट, कोलंबो पोर्ट सिटी और आर्थिक क्षेत्र के को लेकर विरोध प्रदर्शन हुए। इस संदर्भ में "कोलंबो के उत्तर और दक्षिण में समुद्र तट के 175 मील की दूरी के साथ पर्यावरणीय क्षति एवं समुद्र से जीवनयापन करने वाले 80,000 घरों पर प्रभाव" के खिलाफ चिंता व्यक्त की गई थी।[149] हंबनटोटा बंदरगाह के विकास को 2017 में एनयूजी सरकार द्वारा पर्यावरण संबंधी कारणों से कुछ समय के लिए निलंबित कर दिया गया था, लेकिन बाद में इसे फिर से शुरू कर दिया गया।

गौर करने वाली बात यह है कि, श्रीलंका ने, चीन का एक महत्वपूर्ण बीआरआई एवं रणनीतिक साझेदार होने के नाते, अपनी विदेश नीति में तटस्थता दर्शाने की कोशिश की, जिसका महिंदा चिंतन, एनयूजी सरकार के 100-दिवसीय

> श्रीलंका ने, चीन का एक महत्वपूर्ण बीआरआई एवं रणनीतिक साझेदार होने के नाते, अपनी विदेश नीति में तटस्थता दर्शाने की कोशिश की, जिसका महिंदा चिंतन, एनयूजी सरकार के 100-दिवसीय कार्यक्रम और एसएलपीपी सरकार द्वारा विस्टा ऑफ प्रॉस्पेरिटी एंड स्प्लेंडर जैसे विभिन्न दस्तावेजों में किया गया है।

कार्यक्रम और एसएलपीपी सरकार द्वारा विस्टा ऑफ प्रॉस्पेरिटी एंड स्प्लेंडर जैसे विभिन्न दस्तावेजों में किया गया है। उदाहरण के लिए, दक्षिण चीन सागर पर चीन के समुद्री सिल्क मार्ग के विचार की सराहना करते हुए, श्रीलंका ने विवाद के मुद्दे को "अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और नियमों के अनुसार संबंधित पक्षों द्वारा बातचीत, परामर्श और सहयोग के माध्यम से विवादों और मतभेदों के निपटारे" की बात कही।[150] यह स्थिति युद्ध के बाद की विदेश नीति के उन्मुखीकरण के अनुरूप है कि 'वाणिज्यिक कूटनीति के साथ-साथ, देश को उभरते हुए क्षेत्रीय पावर प्ले से अपनी सुरक्षा करने की आवश्यकता है जो पहले से ही दक्षिण चीन सागर और कोरियाई प्रायद्वीप पर स्पष्ट हैं।[151] श्रीलंकाई विद्वान आसन अबेयगूनासेकरा के अनुसार, युद्ध के बाद के वर्षों में श्रीलंका द्वारा बाहरी देशों के साथ जुड़ाव ने इस दुविधा को प्रदर्शित किया कि एक समष्टि विदेश नीति को कैसे बनाए रखा जाए, उदाहरण के लिए, बढ़ते चीन और उभरते हुए भारत के बीच।[152]

2012 से, चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने श्रीलंकाई समकक्ष के साथ संयुक्त अभ्यास और प्रशिक्षण, और मानवीय सहायता व आपदा राहत (एचएडीआर) संचालन किया है। उदाहरण के लिए, सिल्क रोड कोऑपरेशन-2015 स्पेशल ऑपरेशन यूनिट्स हेतु ज्वाइंट काउंटर टेररिज्म ट्रेनिंग जून 2015 में कोलंबो में आयोजित की गई थी, और एचएडीआर ऑपरेशन अगस्त 2017 में आयोजित किए गए थे। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (पीएलएएन) कार्य समूह श्रीलंका गया था, जब श्रीलंका बाढ़ की चपेट में आ गया था। कार्य समूह ने आपदा राहत प्रयासों में भाग लिया, चिकित्सा सेवाएं और महामारी की रोकथाम प्रदान की।[153] इसमें चीनी और भारतीय सेना दोनों ने अभ्यास-कॉर्मोरेंट स्ट्राइक VIII नामक क्षेत्र प्रशिक्षण अभ्यास के आठवें संस्करण में भाग लिया था।

द्वीप राष्ट्र श्रीलंका ने विभिन्न विदेशी नौसेनाओं के जहाजों के उनके बंदरगाह से गुजरने का स्वागत किया।[154] श्रीलंका ने भारत-चीन संबंधों से जुड़ी संवेदनशीलता के बारे में अपनी जागरूकता प्रदर्शित करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, पूर्व राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे ने नवंबर 2019 में श्रीलंका के राष्ट्रपति का कार्यभार संभालने के बाद भारत की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा से पहले कहा था, "हम सभी देशों के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं और हम ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहते हैं जिससे किसी अन्य देश को नुकसान पहुंचे, हम भारतीय चिंताओं को समझते हैं, इसलिए हम ऐसी किसी भी गतिविधि में शामिल नहीं हो सकते हैं जिससे भारत की सुरक्षा को जोखिम पैदा हो।"[155]

2022 घटनाक्रम: नई चुनौतियां

वर्ष 2022 में एक बार फिर भारत-श्रीलंका संबंध नाजुक स्थिति में आ गए हैं। 2022 में श्रीलंका आया आर्थिक और राजनीतिक संकट, श्रीलंका के इतिहास में अभूतपूर्व घटना है। तीस वर्षों तक सशस्त्र जातीय संघर्ष, कोविड-19 महामारी, यूक्रेन युद्ध, कई सरकारों द्वारा वर्षों से लिए गए आर्थिक नीतिगत फैसले, कर में कटौती व जैविक खेती में बदलाव ने आर्थिक संकट को जन्म दिया। गोटबाया राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार की ईंधन एवं आवश्यक खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने में विफलता के कारण जनता में आक्रोश फैल गया। श्रीलंका अपने 52 बिलियन डॉलर के कर्ज को चुकाने से चूक गया और इतिहास में पहली बार इसे दिवालिया घोषित किया गया। 9 जुलाई 2022 को जनता ने

संकट के बीच, भारत नैतिक एवं भौतिक समर्थन देकर श्रीलंका का एक विश्वसनीय भागीदार बना रहा है। अकेले 2022 के मध्य तक, भारत ने लगभग 4 बिलियन डॉलर की वित्तीय सहायता प्रदान की।

राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर लिया और प्रधानमंत्री आवास पर हमला बोल दिया। इन घटनाक्रमों की वजह से राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को देश छोड़ना पड़ा और वो पहले मालदीव, फिर सिंगापुर और अंत में थाईलैंड चले गए। वह सितंबर 2022 में श्रीलंका लौट आए। इस बीच, प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे को 20 जुलाई 2022 को श्रीलंका के सांसदों द्वारा राष्ट्रपति चुना गया। लेकिन श्रीलंका की परेशानियां अभी खत्म नहीं हुई हैं। इसे अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए आईएमएफ से बेलआउट और द्विपक्षीय भागीदारों से संभावित ऋण अधिस्थगन की आवश्यकता है। श्रीलंका सो सितंबर 2022 में 2.9 बिलियन डॉलर के आश्वासन हेतु आईएमएफ से स्टाफ लेवल का आश्वासन मिला। श्रीलंका को अपनी आर्थिक स्थिति को स्थिर करने में एक या दो साल लग सकते हैं। आईएमएफ ऋण पुनर्गठन, भारत, चीन और जापान जैसे श्रीलंका के द्विपक्षीय ऋणदाताओं से ऋण राहत से भी जुड़ा हुआ है। पेरिस क्लब ने भारत और चीन से संपर्क किया है और दोनों देशों से श्रीलंका के लिए ऋण राहत पर मिलकर काम करने को कहा है।

संकट के बीच, भारत नैतिक एवं भौतिक समर्थन देकर श्रीलंका का एक विश्वसनीय भागीदार बना रहा है। अकेले 2022 के मध्य तक, भारत ने लगभग 4 बिलियन डॉलर की वित्तीय सहायता प्रदान की।[156] इसका उपयोग ईंधन, दवाओं और आवश्यक खाद्य पदार्थों की आपूर्ति हेतु किया गया। तमिलनाडु सरकार ने भारतीय सहायता के हिस्से के रूप में 16 मिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यक वस्तुओं का उपहार भी दिया है। 9 जुलाई 2022 के घटनाक्रम के बाद, भारत ने एक बयान दिया कि "वह श्रीलंका के लोगों के साथ खड़ा है क्योंकि वे लोकतांत्रिक तरीकों, मूल्यों और संवैधानिक मार्ग के जरिये समृद्धि और प्रगति के लिए अपनी आकांक्षाओं को साकार करना चाहते हैं।"[157] यह भारत की ओर से एक महत्वपूर्ण बयान है, क्योंकि इससे श्रीलंका में आर्थिक एवं राजनीतिक संकट को हल करने के संवैधानिक साधनों के प्रति भारत का समर्थन प्रदर्शित होता है। भारत श्रीलंका संबंधों पर संकट के अधिप्लावन प्रभावों को लेकर भी चिंतित था। श्रीलंका में आंतरिक जातीय संघर्ष के दौरान भारत आने वाले शरणार्थी प्रवाह के विपरीत, इस संकट के दौरान श्रीलंका से बड़े पैमाने पर लोग भारत नहीं आए। बहरहाल, अगर निकट भविष्य में आर्थिक और राजनीतिक स्थिति स्थिर नहीं होती है, तो इसकी वजह से शरणार्थी प्रवाह और अन्य गैर-पारंपरिक खतरे उत्पन्न हो सकते हैं। साझा समुद्री सुरक्षा चिंताओं को दूर करने हेतु श्रीलंका में स्थिरता एक पूर्व-अपेक्षा है।

क्षेत्र में नाजुक भू-राजनीतिक संतुलन को देखते हुए, भारत की चिंता का एक और कारण श्रीलंका में संकट की स्थिति का अन्य बाहरी देशों द्वारा अपने हितों के लिए उपयोग करना है। चीन को लेकर चिंता अधिक है। एक तरफ भारत ने लगातार संकट का जवाब दिया है, तो वहीं चीन ने लगभग 76 मिलियन डॉलर की मानवीय सहायता प्रदान करने से पहले कुछ समय तक प्रतीक्षा और स्थिति पर नज़र रखने का विकल्प चुना। लेकिन आर्थिक संकट से निपटने में श्रीलंका के 4 बिलियन डॉलर की आपातकालीन सहायता के अनुरोध का जवाब देना अभी बाकी है।[158] इसने श्रीलंका को आईएमएफ बेलआउट के संबंध में भी अपनी नाराजगी व्यक्त की, जो आईएमएफ के संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम से जुड़ा है। संकट के प्रति चीन के दृष्टिकोण का उसके "प्रमुख वैश्विक लेनदार के रूप में कद के आधार पर बचाव किया गया है, जो वित्तीय कठिनाई में कई अन्य देशों के सामने आर्थिक रूप से जोखिम में है।"[159] वित्तीय सहायता हेतु श्रीलंका द्वारा पश्चिमी देशों से मदद को चीन द्वारा इस क्षेत्र में अपने हितों के प्रति नकारात्मक माना जाता है। उदाहरण के लिए, संकट के बीच में, चीनी प्रधानमंत्री ने पूर्व राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को जन्मदिन की शुभकामनाएं भेजीं, और रबड़-चावल समझौते को "स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, एकता और आपसी समर्थन" बताया।[160] यह संदेश श्रीलंका हेतु एक अनुस्मारक था, संभवतः श्रीलंका के विदेश नीति निर्माताओं द्वारा परिकल्पित तटस्थ और

स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करने के लिए।[161] श्रीलंका पर चीन का लगभग 2 बिलियन डॉलर का कर्ज है और चीन द्वारा श्रीलंका में कुल निवेश लगभग 8 बिलियन डॉलर है।[162]

चीन द्वारा ऋण पर राहत देने की अनिच्छा हिंद महासागर पर केंद्रित चीन-श्रीलंका रणनीतिक संबंधों के आड़े नहीं आई। भारत की चिंताओं के बावजूद, चीन के एक उपग्रह ट्रैकिंग पोत युआन वांग 5 को 16 से 22 अगस्त 2022 तक हंबनटोटा बंदरगाह में एक "अनुसंधान पोत" के रूप में डॉक किया गया था। चीन ने हंबनटोटा में पोत के रुकने का बचाव किया, ऐसे समय में जब श्रीलंका गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा, "अनुसंधान पोत युआन वांग 5 द्वारा किया गया समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान अंतरराष्ट्रीय कानून और अंतरराष्ट्रीय सामान्य अभ्यास के अनुरूप है, और यह किसी भी देश की सुरक्षा और आर्थिक हितों को प्रभावित नहीं करेगा।"[163] हालाँकि, भारत क्षेत्र में बढ़ती चीनी उपस्थिति को लेकर चिंतित है और जून 2022 में मल्टी एजेंसी मैरीटाइम सिक्योरिटी ग्रुप (एमएएमएसजी) की पहली बैठक में भारत के एनएसए अजीत डोभाल द्वारा की गई टिप्पणी भारत की चिंताओं को दर्शाती है। इस बयान में "उभरती सुरक्षा चुनौतियों और हिंद महासागर में बढ़ती प्रतिद्वंद्विता एवं प्रतियोगिताओं के सामने भारत के समुद्री हितों की रक्षा में शामिल विभिन्न एजेंसियों के बीच निर्बाध समन्वय" का आह्वान किया गया है।[164]

संकट के बीच श्रीलंका ने फिर से भारत की सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज किया। लेकिन, भारत ने यह रुख अख्तियार किया कि, 'श्रीलंका एक संप्रभु देश है और स्वतंत्र निर्णय ले सकता है और भारत व चीन के संदर्भ में, भारत ने संबंधों के विकास के आधार के रूप में पारस्परिक सम्मान, पारस्परिक संवेदनशीलता और पारस्परिक हित की आवश्यकता को लगातार बनाए रखा है।'[165] यह देखा जाना शेष है कि श्रीलंका अपनी सुरक्षा चिंताओं के साथ-साथ

> चीन द्वारा ऋण पर राहत देने की अनिच्छा हिंद महासागर पर केंद्रित चीन-श्रीलंका रणनीतिक संबंधों के आड़े नहीं आई।

अपने समुद्री पड़ोसी भारत की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक और आर्थिक स्थिति को कैसे संभालेगा।

एक बार फिर से पश्चिमी देशों का ध्यान श्रीलंका में सुलह एवं मानवाधिकार के मुद्दों पर केंद्रित हो गया है। यूरोपीय संघ श्रीलंका पर सुलह पर प्रगति दिखाने का दबाव डाल रहा है और यूरोपीय संघ की जीएसपी+ स्थिति प्रगति से जुड़ी हुई है। 9 जुलाई 2022 को एसएलपीपी सरकार के खिलाफ जनता को लामबंद करने वाले कार्यकर्ताओं पर पीटीए के इस्तेमाल पर पश्चिम और संयुक्त राष्ट्र ने भी कड़ी आपत्ति जताई।

राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के नेतृत्व वाली सरकार को अभी तक जनता का समर्थन नहीं मिला है और वैधता की यह स्पष्ट कमी स्थिर सरकार हासिल करने में बाधा है, दो द्वीप राष्ट्र के आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को हल करने के लिए आवश्यक है। संकट को दूर करने में राजनीतिक दलों के बीच साझा समझ की कमी के कारण विभिन्न हितधारकों से बनी एकजूट सरकार का गठन नहीं किया जा सका है। श्रीलंका में संकट के दौरान भारत की भूमिका की काफी सराहना की गई है, लेकिन भविष्य में चीन का जोखिम दूर नहीं हो सकता है। श्रीलंका के अनुसार, 'चीन मित्र है लेकिन भारत-श्रीलंका संबंध विशेष हैं और भारत के सुरक्षा हित श्रीलंका के अपने सुरक्षा हित हैं।'[166] जहां तक जातीय मुद्दे का संबंध है, सितंबर 2022 में, भारत ने कड़े शब्दों में यूएनएचआरसी में जातीय मुद्दे का राजनीतिक समाधान तलाशने में "औसत दर्जे की प्रगति की कमी" का उल्लेख किया।[167]

2009 के पश्चात सुरक्षा गतिशीलता: अवलोकन

- विगत दशक में, भारत-श्रीलंका ने हिंद महासागर दृष्टिकोण एवं समुद्री सुरक्षा सहयोग में तालमेल बनाकर संबंधों में खाई को पाटने की कोशिश की। श्रीलंका सरकार द्वारा उठाए गए कदमों में अंतर होने के बावजूद, बाहरी देशों के साथ सुलह एवं जुड़ाव की दिशा में द्विपक्षीय संबंध जमीनी स्तर पर बने रहे। मतभेदों के बावजूद, भारत के साथ साझेदारी को श्रीलंका ने महत्व दिया है, और इस द्वीप राष्ट्र की सरकार ने विभिन्न आधिकारिक बयानों और नीति दस्तावेजों में इसे बार-बार रेखांकित भी किया है।

- श्रीलंका में आंतरिक राजनीतिक गतिशीलता ने भारत-श्रीलंका संबंधों को आकार देने में एक बड़ी भूमिका निभाई और यह भविष्य की स्थिति को भी निर्धारित कर सकती है। श्रीलंका में आंतरिक युद्ध समाप्त हो सकता है, लेकिन अंतर्निहित संघर्ष की स्थिति आज भी बनी हुई है। यहीं भारत की चिंताएं हैं। युद्ध के मूल कारणों को हल करने में श्रीलंका की अक्षमता, युद्ध से तबाह उत्तर का विसैन्यीकरण, पीटीए जैसे कठोर आतंकवाद कानूनों का कार्यान्वयन, और सुलह में प्रगति की कमी पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान बना रहेगा। तमिल के संदर्भ में अनिश्चितता राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधों को विकसित करने तथा बढ़ाने में बाधा बनी रहेगी। सुलह के लिए भारत की प्रतिक्रिया को श्रीलंका में बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा अलग-अलग तरीके से देखा जाना, इस समस्या को हल करने में समस्या बन रही है।

- भारत-श्रीलंका संबंधों में राजनीतिक एवं ऐतिहासिक जटिलताओं को खत्म करना कठिन है। श्रीलंका के लोगों के बीच श्रीलंका के क्षेत्र पर भारतीय प्रभुत्व का डर इसकी स्वतंत्रता के बाद से एक वास्तविकता रही है। यह डर कम तो हो सकता है लेकिन भरोसे की कमी बनी हुई है। यह देखा जाना दिलचस्प है कि श्रीलंका के साथ अपने आपसी संबंधों में भारत इस कठिन दौर को कैसे पार करेगा। दोनों देश इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि संबंधों में सुधार के बावजूद भारत-श्रीलंका संबंधों में विश्वास की कमी आज भी बनी हुई है। लेकिन इसकी वजह से भारत महामारी के दौरान श्रीलंका को आवश्यक मानवीय और वित्तीय मदद देने तथा आपदा प्रबंधन में सहयोग करने से पीछे नहीं हटा। भारत के लिए, श्रीलंका का समर्थन नहीं करने का मतलब होगा इस क्षेत्र में अपना एक भागीदार खोने का जोखिम उठाना।

- भारत और श्रीलंका दोनों ही हिंद महासागर के समुद्री क्षेत्र की अस्थिरता और इस क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न शक्तियों के हितों के टकराव (आर्थिक, व्यापारिक एवं रणनीतिक) को समझते हैं। हालांकि श्रीलंका और भारत इस क्षेत्र में शांति व सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न मंचों पर एक-दूसरे का सहयोग कर रहे हैं, बाहरी देशों के साथ संबंधित जुड़ाव और सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में विचलन बाधा बन रहा है। पोतो की डॉकिंग, चीन द्वारा श्रीलंका के बंदरगाहों में रणनीतिक निवेश और एनटीएस से निपटना भारत के लिए एक चुनौती बना हुआ है।

- दक्षिण एशिया में भारत-कैंद्रित सुरक्षा प्रणाली को लेकर श्रीलंका की स्थिति अस्पष्ट है जिसे श्रीलंका आईओआर में अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर एक ही समय में समायोजित करने तथा विरोध करने की कोशिश कर रहा है। लेकिन श्रीलंका के लिए मुख्य चुनौती भारत, अमेरिका और चीन जैसे क्षेत्र में मौजूद शक्तियों के परस्पर विरोधी हितों को संतुलित करने और विभिन्न विदेश नीति प्राथमिकताओं जैसे

> 2022 की शुरुआत से श्रीलंका में आए आर्थिक एवं उससे जुड़े राजनीतिक संकट से द्विपक्षीय संबंधों में नई चुनौतियां आ सकती हैं।

"इंडिया फर्स्ट पॉलिसी," "वन-चाइना पॉलिसी", मुक्त एवं ओपन इंडो-पैसिफिक और बीआरआई को समर्थन के माध्यम से संचालन करना है। एक अन्य चुनौती आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने की है जिससे विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। यह आने वाले वर्षों में भारत के प्रति श्रीलंका की नीति को निर्धारित करेगा। इसलिए, राजनयिक और अन्य चैनलों के माध्यम से, क्षेत्र में विकास, सीमाओं के पास के घटनाक्रम और दोनों देश विकास को कैसे देखते हैं, इसके बारे में और अधिक पारदर्शी तरीके से संवाद करने की आवश्यकता है। सामान्य सुरक्षा दृष्टिकोण विकसित करने में अधिकतमवादी स्थिति से दोनों देशों में घरेलू स्तरों पर मदद नहीं मिल सकती है।

- 2022 की शुरुआत से श्रीलंका में आए आर्थिक एवं उससे जुड़े राजनीतिक संकट से द्विपक्षीय संबंधों में नई चुनौतियां आ सकती हैं। हालांकि, भारत ने नैतिक और राजनीतिक समर्थन दिया है। पूर्व के विपरीत, भारत अब राजनीतिक संकट के साथ-साथ श्रीलंका में आर्थिक संकट से भी निपट रहा है। श्रीलंका का आर्थिक और राजनीतिक रूप से अस्थिर होना, भारत के लिए सुरक्षा हेतु जोखिम हो सकता है। इसकी वजह से आर्थिक व निवेश सहयोग में देरी हो सकती है, सुलह प्रक्रिया धीमी हो सकती है और अन्य क्षेत्रीय शक्तियां इसमें शामिल हो सकती है। शरणार्थी और मछुआरों के मुद्दे अभी भी अनसुलझे हैं। युद्ध के बाद अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु श्रीलंका को भारत ने पर्याप्त वित्तीय और मानवीय सहायता दी है। हालाँकि, भारत की चुनौती क्षेत्र के तेजी से बदलते भू-राजनीतिक और सुरक्षा गतिशीलता में अपने स्वयं के हितों एवं इस द्वीप राष्ट्र के हितों के बीच संतुलन बनाए रखने की है। अब तक भारत और श्रीलंका दोनों ही अपनी विदेश नीति की प्राथमिकताओं के बावजूद संबंधों में मौजूद रणनीतिक खींचतान और दबाव को संभालने में सक्षम प्रतीत हुए हैं।

एंडनोट्स

1 Chris Ogden, Indian Foreign Policy, Polity Press, 2014, UK, p.85-86.

2 Shelton U Kodikara, “Role of Extra Regional Powers and South Asian Security”, in Shelton U Kodikara (ed.), South Asian Strategic Issues: Sri Lankan Perspectives, Sage, New Delhi, 1990, p.35. Chris Ogden, Indian Foreign Policy, Polity Press, 2014, UK, p.91.

3 Chris Ogden, P 91.

4 Harsh V. Pant and Kriti M.Shah, India's South Asia Policy: Shifts and Continuities, in Aparna Pande (ed), “Rout- ledhe Handbook on South Asian Foreign Policy”, 2002, London, P103.

5 Gamini B Keerawella, “Peace and Security Perceptions of a small states: Sri Lankan Responses to Superpower Naval Rivalry in the Indian Ocean 1970-77”, in Shelton U Kodikara (ed) South Asia Strategic Issues: Sri Lankan Perspective, Sage, New Delhi, 1990, p. 180.

6 Foreign Ministry, Sri Lanka, Statement by Foreign Minister during the Adjournment moved by the Leader of the Opposition in Parliament on 22 February 2017, 22 February 2017, https://mfa.gov.lk/statement-by-minister-of foreign-affairs-hon-mangala-samaraweera-mp-during-the-adjournment-moved-by-the-leader-of-the-opposi- tion-hon-r-sampanthan-in-parliament-on-22-february-2017/ Accessed March 1, 2022.

7 S. U. Kodikara, Defence and Security Perceptions of Sri Lankan Foreign Policy PV.J. Jayasekera, Security Decision Makers: A Post-Independence Overview, ma of a small state, Part one, South Asian Publishes Pvt, Ltd, New Delhi, 1992, P214.

8 Ibid

9 A. R. Sriskanda Rajah, Government and Politics in Sri Lanka, Routledge, London and New York, P 28, 2017.

10 Ibid

11 International Crisis Group, “Sinhala Nationalism and the Elusive Southern Consensus”, Crisis Group Asia Report N°141, 7 November 2007, P10-11, https://www.jstor.org/stable/pdf/resrep38352.7.pdf?refreqid=fastly-default%. Accessed 1 September 2022.

12 A. R. Sriskanda Rajah, Government and Politics in Sri Lanka, Routledge, London and New York, 2017, P 38.

13 Ministry of External Affairs, Government of India. Question No.2231 Sri Lankan Citizenship to Tamils, March 04, 2020, https://mea.gov.in/lok-sabha.htm?dtl/32464/QUESTION+NO2231+SRI+LANKAN+CITIZENSHIP+TO+TAMILS. Accessed March 28, 2022. These Acts include, 'Indo-Sri Lankan Agreement (Implementation) Act No. 14 of 1967'; 'Citizenship to Stateless Persons Act No. 39 of 1988 and 'Citizenship to Stateless Persons Act No. 35 of 2003.

14 P Sahadevan, “Managing Internal Conflicts in India, Nepal, Sri Lanka and Myanmar: Strategies and Outcomes”, in V R Raghavan (ed), Policy Choices in Internal Conflicts: Governing Systems and Outcomes, Vij Books, India, New Delhi, 2013, p, 135.

15 A. R. Sriskanda Rajah, Government and Politics in Sri Lanka, Routledge, London and New York, P 103, 2017

16 J N Dixit, Assignment Colombo, Konark Publications, 1998, New Delhi, P 14

17 Ibid, P 361.

18 Crisis Group, “Sri Lanka: The Failure of the Peace Process”, 28 November 2008, https://www.crisisgroup.org/ asia/south-asia/sri-lanka/sri-lanka-failure-peace-process. Accessed March 18, 2022.

19 Gunnar S0rb0, Jonathan Goodhand, Bart Klem, Ada Elisabeth Nissen, Hilde Selbervik, “Pawns of Peace Evaluation of Norwegian peace efforts in Sri Lanka, 1997-2009 Report 5/2011 - Evaluation”, report by Chr. Michelsen Institute/School of Oriental and African Studies, University of London, September 2011, p.

20 Ibid

21 Dayan Jayatilleka, Long War, Cold Peace: Conflict and Crisis in Sri Lanka, Colombo: Vijitha Yapa, 2013, p.330.

22 Ibid.

23 Dayan Jayatilleka, p.332-333.

24 The troika arrangement consisted of India's National Security Advisor, M.K. Narayanan, Defence Secretary Vijay Singh, Foreign Secretary of India Shivshanker Menon, IGothabaya Rajapaksa, Secretary to the President, Lalith Weeratunga, Member of Parliament of Sri Lanka Basil Rajapaksa.

25 MEA, GOI, “EAM's statement in Parliament on the situation in Sri Lanka February”, 18, 2009, https://mea.gov.in/ Speeches-Statements.htm?dtl/922/EAMs_statement_in_Parliament_on_the_situation_in_Sri_Lanka. Accessed January 19, 2022.

26 Shivshanker Menon, Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy, Penguin books, India, 2016, p. 139.

27 Edited by M. Raymond Izarali and Dalbir Ahlawat, Terrorism, Security and Development in South Asia, First published 2021, Routledge, London and New York, p.54.

28 United Nations, “Report of the Secretary- General's Internal Review Panel on United Nations Actions in Sri Lanka”, November 2012, https://digitallibrary.un.org/record/737299 Accessed January 10, 2022.

29 M. Raymond Izarali and Dalbir Ahlawat (ed), p. 49

30 Ibid

31 Edited by M. Raymond Izarali and Dalbir Ahlawat, p.57.

32 Business Standard, “India earmarks Rs 500 cr for IDPs in Lanka”, 20 January 2013, https://www.business-standard.com/article/companies/india-earmarks-rs-500-cr-for-idps-in-lanka-109072200169_1.html. Accessed on August 20, 2022.

33 Ministry of External Affairs, Brief on India-Sri Lanka Relations, 1 July 2021, https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Brief_on_India_for_website.pdf. Accessed January 25, 2022.

34 The Ministry of External Affairs, Government of India, “Suo Motu Statement in Lok Sabha by EAM on “The Situation in Sri Lanka” August 04, 2011, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.hMdtl/50/Suo_Motu_Statement_in_Lok_Sabha_by_EAM_on_The_Situation_in_Sri_Lanka Accessed January 30, 2022.

35 Ibid

36 The Ministry of External Affairs, Government of India, “Statement by External Affairs Minister in Rajya Sabha on The Situation in Sri Lanka”, March 14, 2012, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.hMdtl/19102/ Statement_by_External_Affairs_Minister_in_Rajya_Sabha_on_The_Situation_in_Sri_LankaAccessed on February 16, 2022.

37 Ibid

38 The Hindu, “T.N. Assembly Demands Referendum on Eelam”, 27 March 2013, https://www.thehindu.com/news/ national/tamil-nadu/tn-assembly-demands-referendum-on-eelam/article4554161.ece Accessed February 17, 2022.

39 Ministry of External Affairs, Government of India, “Report of the Lessons Learnt and Reconciliation Commission of Sri Lanka”, December 25, 2011, https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/15576/Report+of+the+Lessons+LearnttandtReconciliationtCommissiontof+SritLankaAccessed March 16, 2022.

40 Ibid.

41 Human Rights Watch, “Sri Lanka: Rajapaksa Legacy of Abuse, Assaults on Activists, Resistance to International Investigation in 2014”, 29 January 2015, https://www.hrw.org/news/2015/01/29/sri-lanka-rajapaksa-legacy-abuse Accessed January 31, 2022.

42 India Today, “India's spy agency RAW behind my poll defeat, says former Sri Lankan president Mahinda Rajapaksa”, 13 March 2015, https://www.indiatoday.in/world/story/sri-lanka-president-mahinda-rajapaksa- blames-india-raw-for-his-election-defeat-244216-2015-03-13Accessed February 14, 2022.

43 Foreign Ministry, Sri Lanka, Address by Mangala Samaraweera, Minister of Foreign Affairs at the German Council on Foreign Relations, 22 May 2015, https://mfa.gov.lk/address-by-mangala-samaraweera-minister-of-foreign- affairs-at-the-german-council-on-foreign-relations-2/Accessed March 25, 2022.

44 Human Rights Council, Thirteenth Session, “Resolution adopted by the Human Rights Council on 1 October 2015, 30/1. Promoting reconciliation, accountability and human rights in Sri Lanka”, 14 October 2015, https:// documents-dds-ny.un.org/doc/UNDOC/GEN/G15/236/38/PDF/ G1523638.pdf?OpenElement. Accessed on May 19, 2022.

45 Foreign Ministry, Sri Lanka, Address of Foreign Minister Mangala Samaraweera at Launch of Consultations on Reconciliation Mechanisms, 12 February 2016, https://mfa.gov.lk/fm-address-jaffna-launch/Accessed on May 18, 2022.

46 Foreign Ministry, Sri Lanka, Statement by Hon. Tilak Marapana, PC, MP, Minister of Foreign Affairs of Sri Lanka and Leader of the Sri Lanka Delegation to the 40th Session of the Human Rights Council, 20 March 2019, https://mfa.gov.lk/statement-by-hon-tilak-marapana-p-c-minister-of-foreign-affairs-of-sri-lanka-and-lead- er-of-the-sri-lanka-delegation-to-the-40th-session-of-the-human-rights-

council-on-agenda.Accessed April 8, 2022.

47 Human Rights Council Thirtieth Session Agenda item 2, Annual report of the United Nations High Commissioner for Human Rightsand reports of the Office of the High Commissioner and the Secretary-General Report of the OHCHR Investigation on Sri Lanka (OISL)***, 16 September 2015, https://www.ohchr.org/sites/default/files/ HRBodies/HRC/RegularSessions/Session30/Documents/A.HRC.30.CRP.2_E.docx. Accessed April 10, 2022.

48 The Sunday Times, "TNA hits out at LTTE, calls on Govt. to accept OISL report", 20 September 2015, https://www. sundaytimes.lk/150920/columns/tna-hits-out-at-ltte-calls-on-govt-to-accept-oisl-report-164822.html.Accessed April 8, 2022.

49 Meera Srinivasan, "Sri Lankan President Alleges that RAW is plotting his Assassination", 17 October 2018, https://www.thehindu.com/news/international/sri-lankan-president-sirisena-alleges-that-raw-is-plot- ting-his-assassination/article25241800.ece

50 Ministry of External Affairs, Government of India, "Telephonic conversation between President of Sri Lanka Maithripala Sirisena and Prime Minister Modi", 17 October 2018, https://mea.gov.in/press-releases. htm?dtl/30510/Telephonic_conversation_between_President_of_SrLLanka_Maithripala_Sirisena_and_Prime_ Minister_Modi. Accessed March 23, 2022.

51 Human Rights Council, "Frequently Asked Questions OHCHR's mandate under resolution HRC 46/1", https:// www.ohchr.org/sites/default/files/2021-11/FAQ-accountability-project_EN.pdf. Accessed April 15, 2022.

52 India at the UN Geneva, India's Statement at the 46th Session of the Human Rights Council before the vote on its consideration of the resolution "Promoting reconciliation, accountability, and human rights in Sri Lanka", 23 March 2021, https://twitter.com/IndiaUNGeneva/status/1374314676125900801/photo/. Accessed May 21, 2022.

53 ManeshkaBorham, "Sri Lanka-India ties: Troika mechanism, MR's top priority", 10 February 2019, Sunday Observer, http://www.sundayobserver.lk/2019/02/10/news/sri-lanka-india-ties-troika-mecha- nism-mr%E2%80%99s-top-priority. Accessed September 18, 2022.

54 The US Department of State, "Country Reports on Terrorism 2017 - Foreign Terrorist Organizations: Liberation Tigers of Tamil Eelam", 19 September 2018, https://www.refworld.org/docid/5bcf1f33a.html. Accessed May 9, 2022.

55 Ibid

56 The Straits Times, "Two Malaysian DAP assemblymen, 8 others charged over alleged links to Liberation Tigers of Tamil Eelam", 29 October 2019, https://www.straitstimes.com/asia/se-asia/two-malaysian-dap-assemblymen- eight-others-charged-for-alleged-links-to-terror-group. Accessed February 20, 2022.

57 Press Information Bureau, Government of India, Ministry of Home Affairs "Central government extends ban on LTTE for five years", 14 May 2019, https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=I571956. Accessed March 19, 2022.

58 Business Standard, "Over 58,000 Sri Lankan & 72,000 Tibetan refugees living in India: MHA", 27 April 2022, https://www.business-standard.com/article/current-affairs/over-58-000-sri-lankan-72-000-tibetan-refugees- living-in-india-mha-122042700434_1. Accessed May 5, 2022.

59 Business Standard, "Over 58,000 Sri Lankan & 72,000 Tibetan refugees living in India: MHA", 27 April 2022, https://www.business-standard.com/article/current-affairs/over-58-000-sri-lankan-72-000-tibetan-refugees- living-in-india-mha-122042700434_1. Accessed May 28, 2022.

60 N. Manoharan, "India-Sri Lanka Fishermen Issue: Seeking Solutions", Monograph, Published by NMF, p.20. 2015, New Delhi.

61 C. Christine Fair, book on Urban Battel Filed of South Asia: Lessons Learned from Sri Lanka, India, and Pakistan, Place of Publication? P. 28, URL: https://www.jstor.org/stable/10.7249/mg210a.10 Accessed on April 2022.

62 Ministry of External Affairs, Government of India, "QUESTION NO.2460 INDIAN FISHERMEN ARRESTED BY SRI LANKAN NAVY", March 24, 2022, https://www.mea.gov.in/rajya-sabha.htm?dtl/35028/QUESTION+NO2460+INDI-AN+FISHERMEN+ARRESTED+BY+SRI+LANKAN+NAVY. Accessed April 28, 2022.

63 Sri Lankan Navy, "Navy seizes poaching trawler in northern waters", 21 September 2022, https://news.navy.lk/ oparation-news/2022/09/20/202209200930/. Accessed October 10, 2022.

64 Ministry of External Affairs, Government of India, 2002,

65 The Week, "Sri Lanka arrests 12 Indian fishermen, TN CM Stalin demands steps for immediate release", 4 July 2022, https://www.theweek.in/news/india/2022/07/04/sri-lanka-arrests-12-indian-fishermen-tn-cm-stalin-de- mands-steps-for-immediate-release.html. Accessed July 20, 2022.

66 Ministry of External Affairs, Government of India, "QUESTION NO.965 INDO-SRI LANKA JOINT WORKING GROUP ON FISHERIES", November 24, 2016, https://www.mea.gov.in/rajya-sabha.htm?dtl/27680/QUESTION+NO965+IN-DOSRI+LANKA+JOINT+WORKING+GROUP+ON+FISHERIES. Accessed on March 5, 2022.

67 High Commission of India, Colombo, Sri Lanka, "Joint Press Statement after the conclusion of 4th India-Sri Lanka Joint Working Group (JWG) on Fisheries", 2 September 2022, https://hcicolombo.gov.in/joint_working_group. Accessed 11 October 2022.

68 The Indian Express, "Take steps on fishermen issue, Stalin tells Centre", 26 July 2022, https://indianexpress. com/article/cities/chennai/take-steps-on-fishermen-issue-stalin-tells-centre-8051456/. Accessed 12 October 2022.

69 The Economic Times, "PM Narendra Modi launches deep-sea fishing scheme for Rameswaram fishermen", 27 July 2017, https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/pm-narendra-modi-launch- es-deep-sea-fishing-scheme-for-rameswaram-fishermen/artideshow/5979464Tcms?from=mdr. Accessed 11 October 2022.

70 The New Indian Express, "Tamil Nadu CM MK Stalin announces Rs 11.32 crore aid for fishermen", 22 January 2022, https://www.newindianexpress.com/states/tamil-nadu/2022/jan/22/tamil-nadu-cm-mk-stalin-announces-rs- 1132-crore-aid-for-fishermen-2409914.html. Accessed on 15 October 2022.

71 P.T. Sampanthar, "Fishermen in northern Sri Lanka establish action committee", 9 October 2022, https://www. wsws.org/en/articles/2022/10/10/zvjp-o10.html. Accessed on 12 September 2022.

72 Ministry of External Affairs, Government of India, "Question No. 1342Bilateral Relations with Neighbouring Countries", 28 July 2022, RAJYA SABHA UNSTARRED QUESTION NO.134, TO BE ANSWERED ON 28.07.2022, https:// www.mea.gov.in/rajya-sabha.htm?dtl/35554/QUESTION+NO1342+BILATERAL+RELATIONS+WITH+NEIGHBOUR-ING+COUNTRIES. Accessed on October 25, 2022.

73 Ibid

74 Ministry of External Affairs, Government of India, "India-Sri Lanka Bilateral Relations", 1 July 2021, https://hcico-lombo.gov.in/pages?id=, Accessed on October 26, 2022.

75 National Policy Framework, Government of Sri Lanka,http://www.doc.gov.lk/images/pdf/NationalPolicyframe- workEN/FinalDovVer02-English.pdf Accessed on 8 February 2021. Accessed on 11 September 2022.

76 SamathaMallempati, "India's Investments in Sri Lanka: Same Old Concerns Resurface", 10 March 2021, https:// www.icwa.in/show_content.php?lang=1&level=3&ls_id=5864&lid=4065. Accessed on 13 September 2022.

77 Arun Janardhan, "Explained: Why Sri Lanka pushed India out of Colombo terminal project, what's being offered as compensation", Indian Express, 4th February 2021,https://indianexpress.com/article/explained/explained- why-sri-lanka-has-pushed-india-out-of-

colombo-terminal-project-and-whats-being-offered-as-compensa- tion-7171502/. Accessed on July 24, 2022.

78 Seema Guha, "India's Move to Modernise Trincomalee Oil Tank Farm Faces Resistance In Sri Lanka", 18 January 2022, https://www.outlookindia.com/national/sri-lanka-opposes-india-s-attempt-to-modernise-trincomalee- oil-tank-farm-news-33451. Accessed on September 16, 2022.

79 High Commission of Sri Lanka in India, "Integrated Country Strategy Paper for Sri Lanka Diplomatic Mission in India 2021-23", https://www.slhcindia.org/images/stories/N_images/PDF/ics%20english%20final300821.pdf Accessed on May 9, 2022.

80 Michael J. Green ad Andrew Shearer, "Defining U.S. Indian Ocean Strategy", The Washington Quarterly, Spring 2021, pp.175-189.

81 Indian Navy, "Indian Maritime Doctrine" Indian Navy, Naval Strategic Publication 1.1", Indian Maritime Doctrine 2009, updated online version 2015 © Integrated Headquarters, Ministry of Defence (Navy) 2015, https://www. indiannavy.nic.in/sites/default/files/Indian-Maritime-Doctrine-2009-Updated-12Feb16.pdf.p.57.Accessed on February 12, 2022.

82 Shishir Upadhyaya, India's Maritime Strategy; Balancing Regional Ambitions and China, Rutledge, 2020, New York, P. 11.

83 Daniel Workman, "Crude Oil Imports by Country", https://www.worldstopexports.com/crude-oil-imports-by- country/.Accessed on May 15, 2022.

84 Ibid

85 GaneshanWignaraja and Dinusha Panditaratne, "Sri Lanka's quest for a rules-based Indian Ocean", East Asia Forum, 31 January 2019, https://www.eastasiaforum.org/2019/01/31/sri-lankas-quest-for-a-rules-based-indian- ocean/ . Accessed on May 16, 2022.

86 Ibid, P. 37.

87 Jo Inge Bekkevold and SunnivaEngh,"Silk Road Diplomacy: China's Strategic Interests in South Asia and the", in StenRynning (ed), South Asia and the Great Powers: International Relations and Regional Security, I.B. TAURIS, London, 2017, p. 150.

88 Ministry of External Affairs, Government of India, "Official Spokesperson's response to a query on participation of India in OBOR/BRI Forum", May 13, 2017, https://mea.gov.in/media-briefings.htm?dtl/28463 / Officia l+Spokes-persons+response+to+a+query+on+participation+of+India+in+OBORBRI+Forum Accessed on April 28, 2022.

89 The White House, "Renewing America's Advantages: Interim National Security Strategic Guidance", 2021, https:// www.whitehouse.gov/wp-content/uploads/2021/03/NSC-1v2.pdf. Accessed on July 6, 2021.

90 OECD Business and Financial Outlook, "China's Belt and Road Initiative in the Global Trade, Investment and Finance Landscape", 2018, https://www.oecd.org/finance/Chinas-Belt-and-Road-Initiative-in-the-global-trade- investment-and-finance-landscape.pdf p.3. Accessed on May 2, 2022.

91 The US Department of Defence, "The Indo-Pacific Strategy of the United Nations", February 2022, https://www. whitehouse.gov/wp-content/uploads/2022/02/U.S.-Indo-Pacific-Strategy.pdf.

92 The US Department of State, "Military and Security Developments Involving the People's Republic of China 2021", P10, https://media.defense.gov/2021/Nov/03 /2002885874/-1/-1/0/2021-CMPR-FINAL.PDF

93 Li Jiayao, "China's National Defence in the New Era", 24 July 2019, ttp://eng.mod.gov.cn/publications/2019-07/24/ content_4846452.htm. Accessed July 20, 2022.

94 Shishir Upadhyaya, India's Maritime Strategy; Balancing Regional Ambitions and China, Routledge, 2020, New York, P. 39-40.

95 Ministry of Defence, "Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy", 2015, Indian Navy Naval Strategic Publication (NSP) 1.2, October 2015, https://indiannavy.nic.in/sites/default/files/Indian_Maritime_Se-curity_Strategy_Document_25Jan16.pdf. R17. Accessed on March 16, 2022.

96 Ibid

97 Ibid.76.

98 Indian Navy, "Indian Maritime Doctrine: Indian Navy, Naval Strategic Publication 1.1", Indian Maritime Doctrine 2009, updated online version 2015 © Integrated Headquarters, Ministry of Defence (Navy) 2015, https://www. indiannavy.nic.in/sites/default/files/Indian-Maritime-Doctrine-2009-Updated-12Febl6.pdf.p.63. Accessed March 26, 2022.

99 Ibid

100 Ibid

101 Ministry of External Affairs, Government of India, "Prime Minister's Remarks at the Commissioning of Offshore Patrol Vessel (OPV) Barracuda in Mauritius (March 12, 2015)", https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements. htm?dtl/24912/Prime_Ministers_Remarks_at_the_Commissioning_of_Offshore_Patrol_Vessel_OPV_Barracu-da_in_Mauritius_March_12_2015Accessed on February 1, 2022.

102 Ministry of External Affairs, Government of India, "Overview of India-ASEAN- Relations", 9 May 2022, https:// www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/ASEAN_India_Brief_May_2022.pdf. Accessed January 10, 2023.

103 Ministry of External Affairs, Government of India, "Prime Minister's Keynote Address at Shangri La Dialogue (June 01, 2018)", June 01, 2018, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/29943/Prime+Minis-ters+Keynote+Address+at+Shangri+La+Dialogue+June+01+2018. Accessed on May 24, 2022.

104 The White House, "Indo-Pacific Strategy of the United States", February 2022", https://www.whitehouse.gov/ wp-content/uploads/2022 / 02/U.S.-Indo-Pacific-Strategy.pdf p.16 Accessed on May 1, 2022.

105 Ibid. P13.

106 Ministry of External Affairs, Government of India, , "Prime Minister's Keynote Address at Shangri La Dialogue (June 01, 2018)", June 01, 2018, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/29943/Prime+Minis-ters+Keynote+Address+at+Shangri+La+Dialogue+June+01+2018Accessed on January 28, 2022.

107 S. Jaishankar, "The Indian Way: Strategies for an Uncertain World", HarperCollins, India, 2020, p.10.

108 Ibid p.189.

109 Bhagya Senaratne, "Elements of Sri Lanka's Geopolitics: Impact on United States' Foreign Policy", Maritime Affairs Journal, 7 June 2017, http://dx.doi.org/10.1080/09733159.2017.1326572. P.2

110 S. U. Kodikara, Defence and Security Perceptions of Sri Lankan Foreign Policy P.V.J. Jayasekera, Security Decision Makers: A Post-Independence Overview, ma of a small state, Part one, South Asian Publishes Pvt, Ltd, New Delhi, 1992, P.213.

111 Gamini B Keerawella, "Peace and Security Perceptions of a small states: Sri Lankan Responses to Superpower Naval Rivalry in the Indian Ocean 1970-77", in Shelton U Kodikara (ed) South Asia Startegic Issues: Sri Lankan Perspective, Sage, New Delhi, 1990, p. 192.

112 Permanent Mission of Sri Lanka to the United Nations, Galle Dialogue 2019: "Refining Mindset to address Transnational Maritime threats: A Review of the Decade", Banquet Speech by Foreign Secretary RavinathaAryasinha, 21 October 2019, https://www.un.int/srilanka/statements_speeches/galle-dialogue-2019-refining-mindset-ad- dress-transnational-maritime-threats. Accessed February 1, 2022.

113 BaranaWaidyatilake, "A Smaller State's Quest for Indian Ocean Security: The Case of Sri Lanka", 6 July 2018, https://lki.lk/publication/a-smaller-states-quest-for-indian-ocean-security-the-case-of-sri-lanka/. Accessed on February 20, 2022.

114 Foreign Ministry, Sri Lanka, "Speech by the Hon. Foreign Minister Prof. G. L. Peiris in Parliament, 5 October 2021",

https://mfa.gov.lk/speech-fm-parliament. Accessed March 20, 2022.

115 Sithara Fernando, "The Contribution of the Galle Dialogue to Maritime Security Cooperation: Present Status and Future Possibilities", https://www.jstor.org/stable/pdf/resrep13999.pdf?acceptTC=true&coverpage=false&add- Footer=false. Accessed on April 2022.

116 Permanent Mission of Sri Lanka to the United Nations, Galle Dialogue 2019.

117 GaneshanWignaraja and Dinusha Panditaratne, "Sri Lanka's quest for a rules-based Indian Ocean", East Asia Forum, 31 January 2019, https://www.eastasiaforum.org/2019/01/31/sri-lankas-quest-for-a-rules-based-indian- ocean/. Accessed on March 1, 2022.

118 Foreign Ministry, Sri Lanka, Address by Foreign Minister Tilak Marapana, Indian Ocean Conference 2017: 31 August 2017, https://mfa.gov.lk/address-by-foreign-minister-tilak-marapana-indian-ocean-conference-2017-31-au- gust-2017/. Accessed on April 3, 2022.

119 Shivshankar Menon, India and Asian Geopolitics: The Past, Present, Penguin Random House, India, 2021, p. 279.

120 Ministry of External Affairs, Government of India, "Deputy National Security Adviser Level Meeting of the Colombo Security Conclave", 6 August 2021, https://hcicolombo.gov.in/press?id=. Accessed on March 7, 2022.

121 Ministry of External Affairs, Government of India, Joint Press Statement of the 5th NSA Level Meeting of the Colombo Security Conclave held on 09 - 10 March 2022, in Maldives, March 10, 2022, https://www.mea.gov.in/ press-releases.htm?dtl/34943/Joint_Press_Statement_of_the_5th_NSA_Level_Meeting_of_the_Colombo_Securi-ty_Conclave_held_on_09_10_March_2022_in_Maldives. Accessed on April 2, 2022.

122 Ministry of External Affairs, Government of India, "Outcome Document of the Second NSA-Level Meeting on Trilateral Cooperation on Maritime Security between India, the Maldives and Sri Lanka", July 09, 2013, https:// www.mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/21922/OutcometDocumenttoftthe+SecondtNSALeveltMeet-ingtontTrilateraltCooperationtontMaritimetSecurity+between+IndiatthetMaldivestand+SritLanka. Accessed on January 23, 2022.

123 Sri Lankan navy, Navy seizes narcotics worth more than Rs. 15.86 billion street value in 2021, https://news.navy. lk/oparation-news/2021/12/31/202112311930/. Accessed on May 6, 2022.

124 P.K. Ghosh, "Maritime Security Trilateralism: India, Sri Lanka and the Maldives", 14 May 2014, Strategic Analysis, Vol. 38, No. 3, 283-288, http://dx.doi.org/10.1080/09700161.2014.895230. Accessed on April 10, 2022.

125 Sudarshan Shrikhande, "Sri Lankan officers must be welcomed back to Staff College in Tamil Nadu-for India's sake", Place of Publication? 6 February 2018, https://theprint.in/opinion/sri-lankan-officers-must-be-wel- comed-back-to-staff-college-in-tamil-nadu-for-indias-sake/33655/. Accessed on May 7, 2022.

126 Meera Srinivasan, "Sri Lanka Seeks enhanced military training from India", 8 April 2019, The Hindu,https://www. thehindu.com/news/international/sri-lanka-seeks-enhanced-military-training-from-india/article26774078.ece. Accessed on April 9, 2022.

127 "Sri Lanka 'Priority One' partner in defence: India", 28 February 2021, Indian Express, https://economictimes. indiatimes.com/news/defence/sri-lanka-priority-one-partner-in-defence-india/articleshow/81257381.cms. Accessed on March 9, 2022.

128 P.K. Balachandran, "Sri Lanka Seeks India's Support to Make the Indian Ocean a Zone of Peace Growing anxiety amongst Sri Lankans", 8 October 2022, https://www.thecitizen.in/index.php/en/NewsDetail/index/6/20976/Sri- Lanka-Seeks-Indias-Support-to-Make-the-Indian-Ocean-a-Zone-of-Peace.

129 Vijay Sakuja, "Indian Ocean: Why India Seeks Demilitarisation", 15 December 2014, IPCS, http://www.ipcs.org/ comm_select.php?articleNo=4779

130 Foreign Ministry, Sri Lanka, "Speech by the Hon. Foreign Minister Prof. G. L. Peiris in Parliament", 5 October 2021", https://mfa.gov.lk/speech-fm-parliament/. Accessed on December 5, 2021.

131 Opening address of Minister of Foreign Affairs and Chairman of the Lakshman Kadirgamar Institute Ravi Karunanayake, at the seminar on Emerging Issues in the Indian Ocean and Foreign Policy Forum "Sri Lanka's foreign policy in the face of a global shift", 2 July 2017, Sunday Times, https://www.sundaytimes.lk/170702/ sunday-times-2/sri-lankas-foreign-policy-in-the-face-of-a-global-shift-247995.html. Accessed on November 28, 2022.

132 Ibid

133 ChulaneeAttanayake, "Power Struggle in the Indian Ocean: Perspectives from Sri Lanka", World Scientific, January 2021, https://www.worldscientific.com/doi/pdf/10.1142/97898T1222047_0009, p.169. Accessed on March 28, 2022.

134 Sri Lanka High Commission in Ottawa, Visit of US Secretary of State John Kerry to Sri Lanka, 3 May 2015, http://www.torontoslcg.org/ottawa2/index.php?option=com_content&view=article&id=427:visit-of-us-secre- tary-of-state-john-kerry-to-sri-lanka&catid=53:other-news&Itemid=120. Accessed on February 9, 2022.

135 US Embassy in Sri Lanka, "Joint Statement from the Fourth Session of the Sri Lanka - United States Partnership Dialogue", 23 March 2022, https://lk.usembassy.gov/joint-statement-fourth-session-of-the-sri-lanka-united- states-partnership-dialogue/. Accessed on April 19, 2022.

136 The US Department of State, "U.S.-Sri Lanka amendment to the U.S.-Sri Lanka Open Skies Agreement of 2002 (includes seventh-freedom rights for all-cargo operations)", 4 December 2017, https://www.state.gov/u-s-sri- lanka-amendment-to-the-u-s-sri-lanka-open-skies-agreement-of-2002-includes-seventh-freedom-rights-for- all-cargo-operations/. Accessed on April 8, 2022.

137 Laxman Kadirgamar Institute, "Spotlight on the Indo-Pacific Strategy - Policy Implications for South Asia with Jonathan Henick", 13 February 2020, https://lki.lk/publication/spotlight-on-the-indo-pacific-strategy-policy-im- plications-for-south-asia-with-jonathan-henick/. Accessed on March 28, 2022.

138 Daya Gamage, "Why US-Sri Lanka Pact ACSA Kept A Secret: Tied To US Law", Place of Publication? 14 April 2021, https://www.colombotelegraph.com/index.php/why-us-sri-lanka-pact-acsa-kept-a-secret-tied-to-us--law/. Accessed on March 2, 2022.

139 Ibid

140 Sunday Times, "Now SOFA agreement with US", 19 May 2022, https://www.sundaytimes.lk/190519/news/now- sofa-agreement-with-us-349988.html. Accessed on June 5, 2022.

141 Ibid

142 The Sunday Morning, "JVP demands nullification of SOFA, ACSA following US- Iran tensions", 9 January 2020, https://www.themoming.lk/jvp-demands-nullification-of-sofa-acsa-following-us-iran-tensions/. Accessed on June 22, 2022.

143 Zaki Khalid, "US Entrenchment in Sri Lanka in Context of Indian Ocean Geopolitics", 10 July 2020, Centre for Strategic and Contemporary Research, Issue No. 13, https://cscr.pk/pdf/perspectives/US-Entrenchment-in-Sri-Lan- ka-in-Context-of-Indian-Ocean-Geopolitics.pdf. Accessed on June 16, 2022.

144 Ibid

145 Robert D Kaplan, "Monsoon: Indian Ocean and the Future of American Power", Random House Trade PaperBacks, New York, 2010, p.194.

146 Ibid

147 Business and Human Rights Resource Centre, Sri Lanka: Port City Colombo built by China Communications Construction Co. allegedly damages coastline and impact livelihoods of 80,000 households dependent on fishing", 24 September 2018, https://www.business-humanrights.org/en/latest-news/sri-lanka-port-city-co- lombo-built-by-china-communications-construction-co-allegedly-damages-coastline-and-impact-liveli- hoods-of-80000-households-dependent-on-fishing/. Accessed on October 20, 2022.

148 Foreign Ministry, Sri Lanka, Statement to Media by Hon. Mangala Samaraweera, Minister of Foreign Affairs following bilateral talks with H.E. Wang Yi, Minister of Foreign Affairs of China, 8 July 2016, https://mfa.gov.lk/ fm-remarks-china/. Accessed on April 6, 2022.

149 Foreign Ministry, Sri Lanka, "Speech by the Hon. Foreign Minister Prof. G. L. Peiris in Parliament, 5 October 2021", https://mfa.gov.lk/speech-fm-parliament/. Accessed on June 8, 2022.

150 AsangaAbeyagoonasekera, "Sri Lanka at Crossroads: Geopolitical Challenges and National Interests", World Scientific, 2019, Singapore, p. 21.

151 Li Jiayao, "China's National Defence in the New Era", 24 July 2019, ttp://eng.mod.gov.cn/publications/2019-07/24/ content_4846452.htm

152 BaranaWaidyatilake, "A Smaller State's Quest for Indian Ocean Security: The Case of Sri Lanka", 6 July 2018, https://lki.lk/publication/a-smaller-states-quest-for-indian-ocean-security-the-case-of-sri-lanka/Accessed on March 25, 2022.

153 Indian Express, "Sri Lanka won't do anything that will harm India's interests: President Rajapaksa", 25 November 2019, https://indianexpress.com/article/world/lanka-wont-do-anything-that-will-harm-indias-interests-prez-rajapaksa-6136325 /

154 Ministry of External Affairs, Government of India, "Official Spokesperson's response to media queries on the situation in Sri Lanka", July 10, 2022, https://www.mea.gov.in/response-to-queries.MMdtl/35487/OffidaL Spokespersons_response_to_media_queries_on_the_situation_in_Sri_Lanka. Accessed on July 20, 2022.

155 Ibid

156 Yew Lun Tian, "Sri Lanka Asks China for Help With Trade, Investment and Tourism", 25 July 2022, https://www. usnews.com/news/world/articles/2022-07-25/sri-lanka-asks-china-for-help-with-trade-investment-and-tour- ism. Accessed on July 27, 2022.

157 Ibid

158 Ibid

159 Daily FT, "China says Happy Birthday Gotabaya", 18 June 2022, https://www.ft.lk/front-page/China-says-Happy- Birthday-Gotabaya/44-736358. Accessed on June 25, 2022.

160 R K Balachandran, "Be 'independent', get aid: China's message to Sri Lanka amid economic crisis", 21 June 2022, https://www.deccanherald.com/opinion/panorama/be-independent-get-aid-china-s-message-to-sri-lanka- amid-economic-crisis-1120168.html. Accessed on June 26, 2022.

161 Ibid

162 Deccan Herald, "The ball is in Sri Lanka's court': China on debt restructuring request", 28 August 2022, https:// www.business-standard.com/article/international/the-ball-is-in-sri-lanka-s-court-china-on-debt-restructur- ing-request-122082800425_1.html. Accessed on September!, 2022.

163 Colombopage, "China stresses Yuan Wang-5 ship's activities at Sri Lanka port are consistent with international law", 16 August 2002, http://www.colombopage.com/archive_22B/Aug16_1660659786CH.php.

164 The Economic Times, "NSA AjitDoval calls for seamless coordination among maritime security agencies", 30 June 2022, https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/nsa-ajit-doval-calls-for-seamless-coordi- nation-among-maritime-security-agencies/articleshow/92573806.cms?from=mdr. Accessed on September 30, 2022.

165 Ministry of External Affairs, Government of India, "Transcript of Weekly Media Briefing by the Official Spokesperson (August 12, 2022)", https://www.mea.govin/media-briefings.htm?dtl/35635/Transcript_ofWeekly_Me-dia_Briefing_by_the_OfficiaLSpokesperson_AugustJ2_2022. Accessed on August 14, 2022.

166 Economic Times, "China a 'close friend' but India is 'brother' and 'sister', New Delhi's security interests are ours too: Sri Lanka envoy", 19 September 2022, https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/china- a-close-friend-but-india-is-brother-and-sister-new-delhis-security-interests-are-ours-too-sri-lanka-envoy/ artideshow/94310752.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst

167 The Economic Times, "India at UNHRC expresses concern over Sri Lanka's lack of progress on solution to Tamil issue", 13 September 2022, https://economictimes.indiatimes.com/news/india/india-at-unhrc-expresses-con- cern-over-sri-lankas-lack-of-progress-on-solution-to-tamil-issue/articleshow/94163 6 03.cms?utm_source=con- tentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst

डॉ. समथा मल्लेमपाटी विश्व मामलों की भारतीय परिषद में शोध अध्येता हैं। उन्होंने साउथ एशियन डिवीजन, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली से एम. फिल और पी.एच.डी. की और जेएनयू से राजनीति विज्ञान में मास्टर्स किया। उनके अनुसंधान रुचियों में भारत के पड़ोस में विकास, श्रीलंका, मालदीव और म्यांमार पर विशेष ध्यान देने वाली विदेश नीति शामिल है। उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित किया है और श्रीलंका, मालदीव और म्यांमार में आंतरिक विकास से संबंधित विषयों पर नियमित रूप से विभिन्न वेबसाइटों में योगदान दिया है। उन्होंने दो खंडों - "भारत-श्रीलंका संबंध: क्या यह नीति के पुनर्रचना का समय है?" (आईसीडब्ल्यूए और केडब्ल्यू प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021) और "भारत-म्यांमार संबंधों का संवर्धन: आगे का रास्ता" (आईसीडब्ल्यूए और केडब्ल्यू प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021) का संपादन किया है।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

सप्रू हाउस, बाराखंबा रोड, नई दिल्ली-110 001,

भारत दूरभाष : +91-11-2331 7246-49, फैक्स: +91-11-2331 1208

www.icwa.in

2009 के पश्चात
भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिशीलता